\$ 660 660

মনতভুসারসংগ্রহ।

ডাপ **ইশ্পজ্ঞিও নে**প কোন্ব

নাহেৰুকুত

क्त्रमणकी क्षेष्ट्र अवर

क् नन की किन् हा इहे हरेख

সার্**সং এত** ক্রিয়া

কলিকাতা ফুনলনীকেল্লোশাইটির সভাস্থ

গ্রিরাধাবলভ দাস

কর্তৃক

বলভাষায় 'শনুবা' দৈও হইয়া

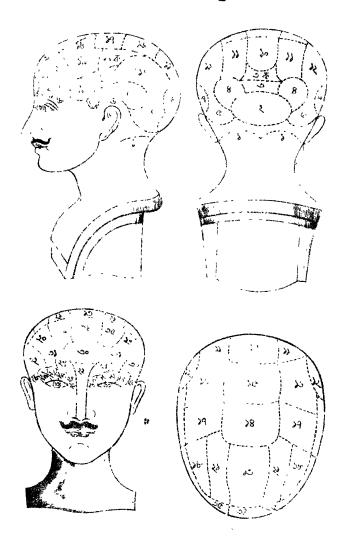
কলিকাডা

সংবাদ প্রথচিজ্ঞোদয় বলে মুজাঙ্কিও হইক।

এই পুজক চুগুওলিক গোলোকচল্প দাসসর বার্টীতে আথবা পুর্তিজ্ঞানম ব্যব্দ ডল্ল করিলে পাইবেদ।

मन ३२०७ माल।

मनञ्जू समृक्षय प्राप्ता



সকল মন ইঞ্জিয়ের ক্ষুদ্ধের বে ইঞ্জিয়ের বে স্থান মনতত্ব সৰ্বাধি মুস্তিতে ক্ষুদ্ধারা চুয় হইয়াহে তাহার নিৰ্বক্ত

v . Ter	
क्रामिक्स	"अक्षा का का शहर शहर है।
ि रेकारेकिया	१ के विज्ञान के, वा दली
ৰতিপ্ৰবৃদ্ধি	All materials
A I Prodefail	१ के का अन्यामि चित्र वह नाई
७। अध्यानसङ्ख	र शिक्स मध्य शिक्ष
ं से । पर्शनान्त्रका र्वा	২১ ু জন্ েপ্র ছি ।
8 रक्ष्मग्रह ि	' अविदर्भ ग्रिया
a । विश्वन अविश्वन	। ভিৰোপনে ক্ৰিয়
ा नागकश्रद्ध	भू । भाग कर्ना हु ।
	<u> ২০। আ</u> ফ্তির্ত্তি।
· क । बोहा धर्कि। ै	रहा शहिमाववृद्धि।
१ । रंगाश्रनश्रद्ध	रका जानमानदास्त
₩ 1 3/1 3 1 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3	रें। जीवस्त्र
* It seems to be	30 1 209 W
	आ। जानवृष्टि।
।। • विश्वारितिष्	रेन्। अहर् छ ।
l आश्रामत्यवृद्धि।	रकी दानीशृष्ट,
%) प्राचनाः धन् र	७०। घरमाव
१६। गडक वा सब्बंख	ওয়া কাল ব বিশ্ব
२ ० । क्यांश र्वेखि ।	36 M 377 W
১৪ । ভাক প্রবৃদ্ধি	98 / AA &
³⁶ । मुख्या २ वृष्टि ।	की है अलगान डॉन्स्स
10 TO TOTAL THE PARTY OF	क्या डेभगाविहा
PI POTTER	সৰ হৈছে ব্যৱ
是"有一种"的"是一种"的"是一个是是一个是一个。 1000年,100	Lan Contract of the 1

अत्मय अवकृतिक अग्रुक वातू (कमवनान मिलक महामग्र मटहानदायु।

আমি এই যে মনজন্ত্রসারসংগ্রহ পুস্তক ইংরাজী नाना अब हरेटब मध्यह कतिशाहि, बाशनिहे हेहात अथम উদেশানী, आश्रमात जननत उ एका । उ माना-रवाश बाता हैशा मुल्लान हरेगारह, जवर जालान আমার এই এন্থ স্কলন বিষয়ে সাধ্যান্ত্রসালে भाराया कतिएक क्रिके क्रांन नारे, क्रमकः क्वांन वाभगकात उदमार ७. चामू केला वह मारात-भाष्ठिक विकास के अपने कि स्थापन के अपने कि स्यापन के अपने कि स्थापन के अपन कि स्थापन के अपने कि स्थापन कि स्थापन के अपने कि स्थापन कि स्थापन कि स्थापन के अपने कि स्थापन के अपने कि स्थापन के अपने कि स्थापन क সূত্রপাত হইল অতএব আমি আনন্দের সহিত এই অভিনৰ পুস্তক আপনীকৈ সমর্পণ করিয়া ক্তজভাভার হইতে মুক্ত হইলাম এবং প্রত্যাশা কুর্নি এতাদৃশ বিষয়ে অবির্ত মনোযোগ সহকারে ্উৎসাহ প্রদান করিতে আপনি কথনই বিরত 🗝 ইবেন না কিমধিক মিতি। 🚬

> প্রীরাধাবল্লভ দাস। চুনাগলি।

क्लिकाला। > टेब्ब् >२०७। কেছ বা অন্ধ প্রশ্ন দৈখিয়া বা শুনিয়া তংকণাৎ
ভাতর করিতে পারে, এবং কেছ বা তর্ক করিতে ও
নানা প্রকার জলকারাদি দিয়া আপন কংগ সুনোভিত ক্বিতে পারে, দিন্ত তিনি প্রয়ণ ভিত্রমকাপ
পাঠ খভাগে করিতে পারিতেন না, তাঁহার চক্
কুদ্র ছিল এবং পাঠশালার সে তালাক উত্ন
কপে পাঠ অভ্যাস করিতে শারিত ভালাপ
স্রাদাই তাঁহা হইতে মানা হইত, এ নকল উত্তম
বালকের চফ্র বৃত্তি

প্রথমে তিনি এমত লেগ করেন নাই, সে চক্
বড় হইলেই উদ্ভম কল পাট প্রভানে করিছে
পারে। কিন্তু পাঠশালার সকল কেনিছে হড় চক্
যুক্ত থালকেরা অতি উন্তমকণে গাট অভ্যাস করি-তে পারিত, মার তিনি বে বন্ধুর সমাত গাহারে বন
মধ্যে প্রমণ করিতে সাইতেন সে ব্যক্তি পথ হারা
হইত না, কিন্তু তিনি স্বান্ধ প্রভ্যাবর্ত্তন সময়ে পথ-ভান্ত হইতেন, এমত ঘটনা স্কল্যই স্টিত, এবং
যাহাদের এই প্রকার যোগাতা ছিল তাহাদের
উভয় জানুলোপরি স্থান শ্রতি উচ্চ ছিল, এই
মত দেখিয়া বিশেষ শ্রেপে বির্কৃনা করিলেন, যে

अहे ज्ञान डेक इहेटलई ज्ञान जातन ताथिटक शाटत। এবজ্ঞকার চিত্র দেখিয়া আপন মন্চেম্বির করি-लन, यहाति होता चिक्क बाता चाहत्व हेलिय अव-বোর প্রান্ত বিভাগ করে মনের অন্যান ওবেরও অবভাই বাফ ডিব্ল **আছে ও তদ্ম**রা নান প্রকার নন্তশক্তি জান। বাইতে পারিবেক। ভংগাত, বি জাজর বল সাহেল যে সকল মত্য চন্ত্ৰ বেলে বিশেষ স্থাত বিষয় তাৰ দেখিতেন ভাকানের ব্যবহার ও গ্রিড মন্দ্রমণ্ট্রেগ পুর্বেক १५ थे. १ । ताम्र १८, तरमानः अहेका । जरमदः छेनाः रका पारक वर्ष वर्ष शति शति स्व मिष्वात्र कांत्र दलन, বে মতা ৭০৬ নাম্য ম**ডিজের পরিমাণীয়**সা-उत्तरे अक अध्य **अधे अकारत कृत्य कृत्य ना**ना দেশীয় নাম ভাতীয় হানা প্রকার মহান্যের বাহ্ ব্যবহার ও ী**তিনীতি** দশ্ভ করিয়া **এবং ভদ্নরু**-সারে আহাদিগের মস্তিতের পরিমাণ **ও বিশেষ**ং - मिर्फिशे काम मिलिल य छ। न **१२८७ व्य**ेखन **উৎপন** इत अ.को जिन्दा कृतियान, **अवर अवरणस्य** अक्टिकिया (विविध अक्टोन अव तहनां अ कतिया-ছেন!

ভূমিকা ৷

बहे जान्छ्या विमा नाना स्मीतु छायाछ छन्न বাদিত হইরাজে, **সম্প্রতি এতদেশীয় জন**গণের खेशकाहार्र्य अहे अ**ह वह क्रिंग है** हाकी माना ক্রেনকজী অর্থাৎ মনতার পুস্তক হইতে সারসংএই করিয়া গোড়ীয় সাধু ভাষায় শকুবারিত এইজন প্রার্থনা করি পাঠক মহাশয়েরা জানুভাট ট্রেক এই পুস্তক পাঠ করিবে আসার গুরুতর াবিশ্র-মের ফলেফ পুরস্কার হুজবে 🔞 ইছা পাঠ করিলে কি উপকার হয় ভাঙা ক্রনা লভ, ভথাতি, এই পুস্তকের মধ্যেই ও শেষা গোডাগুলাই কভিপ্র পংক্তি निश्चिमाम। यहि धरे श्रुष्ठद्वन भरका कोन অংশে কোন জন হইয়া থাকে ত্বে গাঠক মহা-শরেরা শোধন করিয়া গ্রহণ করিলে টেরবাপিছ श्रदेव। The state of the s

এই মহোপকারিণী বিদ্যা চারি কার ইইল এতদেশস্থ অতাপৌ ব্যক্তির জ্ঞাত ছিল, কিন্ত ইং- রাজী ১৮৪৫ নালের ৭ জুন তারিখে কলিপন্ন বিজ্ঞান ক্রান্তা ব্যক্তির দারা কলিকাতা, স্থোনলজী-কল স্থোন্টটি স্থাপিত হওরাপ্যান্ত এতদেশে নিত্য কণ প্রকটিত হইতে আরক হইয়াতে।

প্র র ৫০ বংশদের কিন্দিৎ অধিক হউলা ইউরোপের অন্তলে তি হবারনা দেশ হু ডাক্সর গল্ সাহেব
নই নদা প্রনাম প্রকাশ সন্দেন, তৎপরে তাঁহার
দিনে ভাজর ইশ্পর্জিম্ দলেই ইজা ক্রার
প্রায় হল ক্রিরাছেন, লয় ভত্তর
শ্রীয় হল কাম্ব লাহেব ও অন্যান্য জানী মহাশা
ররল ক্রিক প্রিপ্রায় ক্রিরা ঐ বিদ্যানে উত্তর
প্রতা ক্রিক প্রিপ্রায়েকেন, সম্প্রতি ইলিবরাপে
ক্রেমিক ক্রিরাজেন, সম্প্রতি ইলিবরাপে
ক্রেমিক ক্রেমিকেন, সম্প্রতি ইলিবরাপে
ক্রেমিকিক ক্রিরাজেন, সম্প্রতি ইলিবরাপে
ক্রেমিকিক ক্রিরাজেন, সম্প্রতি ইলিবরাপে
ক্রেমিকিক

চাটার বন মাহের এই বিদ্যার আন্যোৎপ্রিক কর্মন তিনি আপান বাল্যাবস্থাপর্যান্ত নেথিতে নানিলেন ডাহার জাতা ও ভ্রিনী নক-লের চান্ত্রে ও ব্যবহার ভুলা নহে, এবং পাঠশা-লার্ মালি বালকেরাও বিদ্যাভ্যাদের বিষয়ে সকলে সমান নহে, কেহ উত্তম লিখিতে পারে,

সূচিপত্ত। প্রথম থণ্ড।

t	আদ্য প্র	করণ !		村宏气
মনতত্ব বিদ্যার তা	ংপর্য্য,	*****	*****	>
শরীরাবস্থ।র্ণব,		*****	*** :>	ξ.
বায়ুগ্রস্তের লক্ষণ,	*****	*****	,	৩
রক্তবর্ণের লক্ষণ,	*****	131111	*****	8
मृज्ञाभदत्तत लक्त्व,			***	ż
শিরাময়ের লফণ,	*****	• • • •	*****	¢
মনতত্ব বিদ্যার সব	গল প্ৰধা	ন কারণ,		Š
মনের সকল গুণ অ	শু ৰ্জ ি	5,		Æ
मिखिक गरमत मक	न छराङ	ই ক্রি য়		ង្
মস্তিকের ও করে।	টর আহ	ট্ডির তুল	7 51, ···	9
যত শাধিক মনের	প্রধান	গুণ তত	অধিক	
ইক্রিয়ও আছে,	,	* * * * * *	*****	ŀ
প্রত্যেক ইন্দ্রিয়ের	পরিমা	ণ জীবি	তকালে	
অনুউ ৰ করা যা	য়,	`,	*****	્રે.
ইক্রিয়ান স্থাহইতে			ক চিহ্ন	
वर्णम,			*****	٥, ٢
মন্তিকের বর্ণন,				>>

স্কৃতিপত।

Carried and the same of	D marriage mar.	d	olene de la company	শহা ৰ
हे क्रिया मद त्वा डे			<i>ાં સ</i> ાજા શ	
😢 তুল্য করিবার	ধারা,	*****	آچەوۋەدى س	75
· ইন্দ্রিন্ সকলে র	পরিমাণ	ও উন্নবি	চ নির্ঘণ্ট	
করিবার ধারা,	*.* * *.*	***,	*****	ं की
মন্তিকৈর কোন হ	ানে কো	न ইस्टिय	ভাহার	1
वर्गम,		*****	******	'১৩
মুস্তক পরীক্ষা করি	রবার ধা	₹ \ ,		ýs
মন্ত্র বিদ্যা সত্য			ৰ্দ্ধারণ -	4
করিবার ধারা	****	4 * * * * *	*****	ኃ৫
A MAN A MAIN	দ্বিতীয়	क्षेत्र ।	,	
· ·		संद्रं दिवद्रव	· 1	· -
		क्टर्स <mark>खिश</mark>		¥
		सह विदृत्		.,
,		AN INNE	Ę.	
३। इंकिश्रह, इं,	* * * * * * .	****	****	75
২।শিশুপ্রবৃত্তি,	* * * * z *	: # # ¥ 7 *	*****	\$5
ত। সংযোগপ্রাকৃতি	5,	****		. ૨ ૦
ত ক। স্থানারুগ		*****	*****	25
				6
8 । वश्रुष्यवृष्टि,		*		
	TG.			\$ 5
(द) विभाग अन्यव्	, , , ,	<u>u</u>		4
৫। বিপদভঞ্জনপ্রর্ ১। নাশকপ্রবৃত্তি,	*****	P, # # # # #	, •••••	२७

মু চিপ	ज	ļ	

	হ চিপত্ত	4.3	nhm i ha
প্রাণপ্রবৃত্তি	·	**** * ******	्रभाह १९
१। श्रीश्रनथ	বৃত্তি,	erus - " - dant, s	**************************************
৮। উপार्कन	धर्डि,	The State of the S	3.3
व। निर्मानल	রন্তি, শার্		29
3 270	र । विन्हार्शकार्य		
२०। आञ्चामः		R. 199391	* '4
১১। আত্মকশ			₹৮
১২ ৷ পতক্তা	• • ।	ge e e e e e e e e e e e e e e e e e e	29
,	·='		
১৩ ৷ দুয়াপ্রাক্ত	*		··· 🔊
১৪ ভ জিপ্রাব্		***** *****	192
न्य । केल्लाबर्व	fo,	Market Committee	৩২
2011501156	विद्वहमा श्रव्	1.5. · · · · ·	· ৩৩ [']
>৭। প্রত্যাশার			•
্চ া আশ্চর্য্যর	`	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	· \\ \\$8
>৯। কবিতাশা	क वा ओक्तर्या	ଅସ୍ଥିତ,	ু ৩৫
২ । পরিহার2			. 39
২১ অনুকরণ৫	াবৃত্তি,	•	99
Fe Fe	छीर अकड्रम्। ज्ञा	দেবিয়	. 1
	। बारा हे कि दस्त	विवस्त ।	
ৰ গিন্দিয়,			· 88

	স্কৃচিপত।	25	ing billio
AND A STATE OF THE		-	(a) A
त्रमध्याः		**************************************	96
SICHOLAN		**************************************	Ď,
धार भीतार			<u> </u>
तर्नात्रीक्षत्र,			.
	প্ৰদৈতিয়ের বিবরণ	1 (1911) 1 (1911)	4 45
১২২। পার্থকার্ডি , ঃ			୫ ୬
		is a Siring a second	89
২৩। সার্কডিইবি,			,
२८। পরিমাণ্ট্রি	1/3	4.	(m)
'द्र । नाति प्रवृद्धिः		***	86
২৬। বৰ্ব্			82
২৭। স্থানবৃত্তি	A Service of the serv		
で物質をよった。			· (* •
ুচ। প্ৰকৃতি		10 mg	
१२०। त्यनीन् खि	A RAME OF THE BOOK		. 4
্ত । ঘটনাবৃত্তি,		Agreement of the second	・・ 企 为ッパ 。 。
৩১। কাল বৃত্তি,			
্র্ছেই। শ্বরবৃত্তি,	1 mg 1 mg 2 mg 2 mg 2 mg 2 mg 2 mg 2 mg		. (65
ا با الله الله الله الله الله الله الله		Carlotte Control of the Control of t	
৩৩ শত্ৰু ছি,	The Care Coas		
		ران سمائسی ایورسمائطه ^{این}	- 68
७८। উপमार्खिः	Christian Division of a	ر المعرف المراقع المرا المراقع المراقع المراق	- ee
,৩৫ ৷ হৈতুবৃত্তি,			
ৰাহ্যবস্তুর সহিত	रन्द्रगत कादन स	रशत । भल-	i, co

স্থৃতিপত্ত তৃতীয় খণ্ড।

,** _* -	7				WALK.
মনঃ শক্তি সব	লের ক্রিয়	ার ধার	,	•	J. 19 2
ইক্টাইন্দিয় ও	विदार्वे	ব্যের তি	নয়ার ধ	ার:	৬১
छ्वा त्नि (ग्रे.व.)	ক্রিয়ার ধার	1/2***	***	***	৬৭
প্রত্যক,		***		***	40
व्यन्तर्वाष,	J. 17 3 1 3	*** *** **	b # #	***	1 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2
অনুভব,	* ****	*** 4515	***	***	ш
4 4.6	### ## 476 h	are high	• 4•		7.
ইতর বিশেষ I	विदेशका,	***		***	7.
मानमिक देवक	a),	***	, 14	* (Š
मदमादयां श		, * # .	* * *	***	१२
অনুরাগ,	*** ***	***	1 4	· uì	ಷ
সুখ ও ছঃখ,		***	i t #	• •	11 "
देश्या देशया,	1 Table 1	When the	***		90
षानम ও नित	। नेपर,	**************************************	***		9 %
শভাব,	•••	***	# T	4 *	49
পছন্দ, 🐈		· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·		, ,	42
কাম, ক্ৰোধ, যে	गार्छ, समृ	মাৎসূর্য	J. 19 C	N E.	49
मन्छत्र विकास	March and Shares			7 T	b~>
পাঠক মহাশয়	MARKET AND THE PARTY OF	200 Can 64 13	7.4.		ð.

অভন্ন লোগন পত্ৰ ৷

मूखें इ	Φŗ.	্ , অশুদ্ধ	**
્ર	្ន	जेशारान '-	तेः अमान ।
	30	The Fiftigue	নত অধিক।
	Alcalina.	ভতোপিক	তত অধিক।
3,	\$ 6	'অন্বর্ক্তি	ু অকর্তি '
9	\$	নিযুক্তারু মানে	র্ নিয়োগানুসারে
!	>	ষ েভাবি ক	যত স্বিক।
	Manufilly w	'হতে' বিবু ঃ	ভত অধিক।
3/3	N.	নামিহিছ 💘	শ্বিহিত।
₹ ₹	2%	ग्रज्याश्रेष	শ্রী শর্মাপর ৷
9.4	, ,	अ [(*;	म ज्ला
* តំ	<i>''</i>	नमा है जिस्स	नन हिन्द्रिय।
8P.	سوار نو	राष्ट्र । त	র জ্বপরি।
4 v	, en	语外 语	পূৰ্ব
৬ ৮	38	উৎসাহাহিত	ু উৎসাহান্তি।
9.15	>シ	ंचाइ, बदल 😬	ভাৰ্যশঃ
* 17:	ir	शीवम् 💮	नीत्र ।
p =	৪	প্রাকাশ	(4)

মনতভু সারসংগুহ।



WINI COPEN

সনতত্ব বিদ্যাত্যাস করিপে মনের তান সকল এবং যেই ইক্রিয় * ইইতে ঐ সকল তানের প্রকাশ হয় তাহা নির্দ্ধারণ করা যায়, কিন্তু ইহাতে ভুত ভবিষাৎ বলিতে পারাষায় না।

এই বিদ্যার আবশাকতা ও ব্যবস্থার জানিবার পুর্বের ইমার বীজের সভাব ও সীনা জাক মুথ্য উচিত, এই বিষয় পর্ধণ্ডে বণিত হইবে

এই গ্রন্থে মে নকন ইজির শব্দ ব্যবহার করা ভিত্ত হ
 তাহা সমুদারই মান্তিক শক্তির আধার হ্লাইবৈক, ইংরার্জাতে
ঘাহাকে আক্রাণে (Orean) বলিয়া আতে।

সম্প্রতি নমুন্য মাত্রের স্বভারের উপাদান স্থাৰুপ কর্মেজিয় ই জ্ঞানেজিয়ের ই ক্রিয়ার চিত্র কেবল ব্যক্ত করিয়াম

ক্ষারী, শিক্ষা, হিতোপদেশক, ওব্যবস্থাপক, ইহাদিগের এই বিদ্যাভ্যাস করা স্পত্যাবশ্যক, কারণ এই বিদ্যাভ্যাস করিলে সংসারী ব্যক্তি আত্ম পরিবারের স্বভাব বিশেষ রূপে জ্ঞাত হইয়া তাঁহাদের সহিত তদসুয়ায়ি ব্যবহার করিবেন। শিক্ষক যে বিষয়ে শিষ্যের ক্ষমতা দেখিবেন মেই-কণ বিদ্যাভ্যাস করিতে অনুসতি করিবেন, হিতোপদেশক যথোচিত উপদেশ প্রদান করিবেন, প্রবং ব্যবস্থাপক উচিত ও উপযুক্ত নিয়ম নির্দ্ধারিত করিবেন।

বহুকালপর্যান্ত এইমত চলিয়া আরিতেছে বে মন ও শরীর পরস্পর প্রান্তর্ভাব প্রকাশ করে। পূর্কাণর দেখিতে পাওয়া মাইতেছে, শরীরাবছাণ

[•] ক ছিতীয় থাওে এই ছই **উদ্ৰোদ্ধ বিভারিত বিষয়ণ কর**-লাকন করুন।

⁺ भन्न शृद्धे मृष्टि कल्म ।

नसूरवात महन्ते रितनकारणात क्षावाम कात्रण, त्यान कथिए इत बार्षात स्त्रामकातका » पाटह छिनि तानी ७ स्वताक क्षांत चित्र वित्वकृत ७ मनः मः यान शूक्तक कार्त्रा क्षांतिक इन, त्याप इत्र याहात इक्तर्वावका » इत्र कार्षात स्त्रण मक्ति वादक किछ वित्वकना मेक्ति स्वल्भ इत्र, त्यार वादक, ध्वरः वादक क्रियात । स्वथ देक्ता इत्र । अत्रीतावका इटेट्छ मत्नव दकान दिल्पक क्षेत्र केष्ट्रमत्र इत्र ना, देहा त्वदन मत्नत क्षेत्रामर मक्तिक कार्षिक वा स्वल्भ एक्जियनी क्षित्र भारत

मिखात शिवान मर्गटन छाहात स्थार्थ कल निकात कतिए श्रीता यात वटि कि कि निका-स्नादम, वाश्राव स्वादात, ५वर भ्योतावश्राम् नाद्य के कटनत द्वाम इकि स्त्राः भ्योतावश्राम् बाल ठाति व्यास्य विज्ञ स्रेगाट्ड, बास्थास, ब्रक्ट वर्ष स्त्रामस, श्रीत निवासस्य

राब्द्रेड र वास्त कित्य महत्व त्रानाकृष्टि.

अ महे मृद्धि देशां वक्कण होते कहन। चित्रिक्ष बद्धा देशां दिखाँकिक विवसन अवत्वाकन कहन।

माश्मरणेणीत त्यानी क्यानीत, मंती त्वत ननी मकन पूर्क विकृत मम् र विज्ञन, अवश्यक् भा धुवर्ग हम त्य न कर्णाई उद्यान हम ना, आहे मंती त्वत मर्मा दी त्व अवश्यक क्यान क

उक्तरर्गत लक्ष्म छिद्धम शर्मन, व्यवद्यद्वत स्थाम अकात श्रृष्टि, माइट्स्य वर्षाम उन मृण्य, विकृत मम्ह विद्या ७ काजनी, व्यक्त नीलवर्ग, अवर वर्ग प्रमान छ सुध श्रीपेल वर्ग हत्य। हे हात विद्यान विद्या कर्मन कि एक माना- भागन करता, भाती दिक श्रीक्षमा करता वाक्षा हत्र, अवर वर्षन अक्ष्म हता। स्वारा मिन्स करा काम्म करा स्वारा करा हा स्वारा स्वारा करा स्वारा करा हता। स्वारा मिन्स करा करा हता स्वारा करा स्वारा करा हता स्वारा करा हता स्वारा करा हता हिंदी स्वारा करा हता है स्वारा करा है, स्वारा करा है स्वारा करा है, स्वारा करा है स्वारा कर स्वारा करा है स्वारा करा है स्वारा करा है स्वारा कर स्वारा करा है स्वारा करा है स्वारा कर है स्वारा करा है स्वारा कर स्वारा कर स्वारा करा है स्वारा कर स्वारा करा है स्वारा कर स्वारा कर

স্থান রের লকণ তিকুর সমূহ কুক্তবর্ণ, বক্ শ্যানবর্ণ, মাংস সকল সমভার ও দুছতুর, এবং ব-বামান খ্রিমান্ হয়। মতিক্ত প্রবেশ বলেরা করিতে সক্ষম, একারণ মুখ্য দর্শনি বল্বান্ ও চিক্ল করিবার যোগ্য আকৃতি রোধ হয়।

পূর্ব্বোক্ত শরীরাবস্থা সকল ক্লাচিৎ ভিত্ত দেখিতে পাওঁয়া যায়, অর্থাৎ একের কতক লক্ষণ অন্যের লক্ষণের সহিত সংযোগ হয়।

मत्तेत्र मुक्ते श्वन बहुर्जाठ, मिस्क मत्तेत्र महत्त श्वर हेक्तिय, मिस्ट क्रित बाकात वेद शितमान मछ-कित वाकरतां हैते बाकात व शितमात्त्र महिल के का हम्र यट्डाविक मत्तित्र क्षिमान श्वन बाह्य कट्डाविक जित्तर हेक्तिय मिस्टिक विकि मान बाह्य, क्षर्टाक हेक्तियत शितमान जीविक कार्ता बहुमान कता यात विद के शितमान्य बनामा दिवस ममजान यात विद के शितमान्य बनामा दिवस ममजान यात विद के शितमान्य बनामा दिवस ममजान याकिर्ता मिस्ति मीमा वता यात, क्षर्टाक हेक्तिय यहकारत बाह्य विक्रमानिक ब्रुक्तात मतीद्र त

^{🚵 🗭} मिल्लिक निवासश (खंशीर मृत्र 1

হয় যাহাকে ইহার স্বাভাবিক চিত্র বলা যায়। এই সকল মনতস্থ বিদ্যার প্রধান কারণ।

ं मरनव সকল क्षेत्र অন্তর্জাত, কার্রণ আমরা অক मः भारतत भक्त शतिवादतत था अविवासन করিলে দেখিতে পাই যে তাঁহাদের বালক বালি-কারা এক প্রকার উপদেশ পাইয়াও সর্বদা স্বভা-বের ও পারগভার **বৈলক্ষণ্যের চিত্র প্রকাশ করে**, अवर मकन जीरवंद्राष्ट्रे अवस्थाकात् । हिन्द्रित महन বৰ্ত্তমান থাকিলে ভাহাদিগকে কোন কাৰ্য্যে নিযুক্ত করা যাইতে পারে। মনুষ্য কেবল শিক্ষা করাইতে বা উপদেশ দিতে পারে কিন্তু ভাহার৷ কোন মতেই কার্য্য শক্তি প্রদান করিতে পারে না, যেমন আপনাদের উর্কে রুদ্ধি করিতে অক্ষমতাপন্ন হয়। একারণ মনের যে ইন্দ্রি যদমুসারে থাকে ভদনু-যায়িক তাহার শক্তি প্রকাশ হয়, যেমন প্রস্কৃতিক অধিক থাকিলে অতি শীঘ্র অঙ্ক গণ্না করিতে নিপুণ হইতে পার যায়।

मिकि गतनत मकन खरात रेक्सिय, रेरा मर्क

^{*} পর থাওে তাছ বৃত্তি দৃষ্টি করুব।

সাধারণে বলিয়া প্রাকেন, এবং আমাদিগের সভানভায় এই প্রকার বোধ হয় যে মন্তিক ছইতে অনুমান করাবায়, কারণ যে জীবেতে মন্তিক নাই তাহাতে মনের কোন চিক্লপ্ত নাই, কিন্তু বদনুধায়িক ইহা অধিক বা স্বৰ্ণ বলবান ওদন্য-বাহিক তাহার পরাক্রম। আর আঘাত নদাপান, ক্রম, কিন্তা পাড়া এই সকল মন্তিক্রকে ব্যাক্রণ করে, এবং মনের শক্তি সকল এ সংখ্যাতে নোহিত হয়। ইন্দির সকলের অধিক বা ক্রপা নিযুক্তার-মারে তাহার গুণ সকল উৎসাহান্তিত হয়, বা শ্রী হবিত বাল, বা লোপাপন্তি হয়।

मिखित निर्मात अवः পतिमान मस्टरकत वः करताणित न्याकात ७ পরিমানের সহিত তুলা হয়, ইহার অধিক প্রমান দেখিতে পাওয়া নায়, নস্ত-কেয় অস্থি সকল বোধ হয় মিথিকের উপর ছাঁতে ঢালার নায় নির্দান হইয়াছে, এবং মন্তকের ভাস্থি সকলের বিশেষ গঠন মস্তিকের আদা প্রকৃতি কপ নির্দান হয়। মস্তিকের এবং করোটির আরু-ভিতে সমান ঐক্য আছে, জীবিত মন্তুব্যের মিন্তি-কের পরিমান কেবল মন্তক মাপ করিলেই বলিতে পারা যায়।

यटगिविक मदनद्र ध्ववान श्वन श्वाट्य ज्यादिक रेखिर याउँ क वर्जमान आहि, कांत्र बामता ক্রম মনের সকল গুণকে একেবাবে স্বক্র্যাহিত করিতে পারি না, যেমন ক্রোধ ও দরা এককালেতে প্রকাশ হয় না। ইন্দ্রিয় সকল উত্তর্থ রাজি হয়, एयन युवानकारक भर्या कर्या मकल कहियात वाक्षा इस मा किन्छ अधिक **वसः क्य इटेल** के प्रकल विध-ে সন রত হয়। আর কোন্থ ইন্দ্রিরের ক্রমশঃ ক্ষয় हमात्यमम काम योबनावयाम अनल इस किस दक्ष कारत हेशह श्रवनका बादए ना। यमाणि मसि-ক্ষের ভিন্ন স্থান বিভিন্ন গুণ একাশ না করিত ভবে যে ব্যক্তি চিত্র বিচিত্র করিতে নিপ্রণ তিনি অৰ্ণাই গান করিছেও নিপুণ হউতেঃ 'আর ক্ষিপ্ত হাইলে মনের কোন গুণই প্রকাশ হইত 🕬 তজ্ঞা ভিন্ন ই কিন্তু মন্তিকে ধর্তমান আহে অবৃশ্য মান্য করিব, নজুৰা মন্তিদ্ধের একেবারেই পীডিতাবস্থা এবং নিস্পীড়িতাবস্থা হয় আঞ कतिव, का मत्मत नकल छन नक्तार्ट नम्बाद संशि किश निर्दामी स्टेट शाद क्षेत्र कतिय। স্থদেশীয় এবং ভিন্ন দেশীয় লোকের মন্তকের গঠন যে প্রকার দেখিতে পাওয়া যায়, তদনুষায়িক

প্রতেদ তাঁহাদের আচরটো এবং ব্যবহারে প্রকাশ হয়, একারণ পূর্ব্বোক্ত হতান্ত বিশ্বাসজনক।

প্রত্যেক ইন্দ্রিয়ের পরিমাণ জীবিত কালে অন্তভর कता यात्र अवश्र के शतिमांनदक अन्यांना विषय मग-जात थाकित्व मेक्कित भीमा वेला यास, कातून मक-লেই বলিয়া থাকেন বে কোন ত্রব্যের পরিমাণান্তু-লারে তাহার গুণ প্রকাশ হয়, যেমন এক লৌহময় ন্তম্ভ সেই লৌহ গুণ অপেকা শক্তিমান, এবং বৃহৎ এक **राष्ट्रीर येख डारा**त नामाना कूछ येख इरेटल পরাক্রান্ত, আর কলিজার পরিমানানুসারে শরী-রের মধ্যে রক্ত গ্রমনাগ্রমন করে, এবং মাংসপেশীর পরিমাণামুসারে শরীরের শক্তি প্রকাশ হয়, এই প্রকার ধারা পকলকে সাধারণ স্থাভাবিক ধারা বলা যায়, এবং স্বাভাবিক **বস্তু এই সকল** ধারার নিয়ম পালন করে। মস্তিষ্ক এক স্বাভাবিক বস্ত মৃত্রাং ইহাকে এই সকল ধারা ছইতে বর্জন कता कर्खना नटर । अंदे शक्ति मदभा स्व मकल हीत আছে তাহাদের ইন্দ্রিরের পরিমাণানুসারে তাহা-দের পরাক্রমপ্রকাশ হয়, এবং মূলেক্রিয় সকলের ৰে ৰূপ পরিমাণা<u>ন্ত্</u>যায়িক প্রসন্নতা সেই ৰূপ

বাঞ্ ইন্দ্রির সকলের তাকুতা হয়। সকল অবস্থা সমভাব থাকিলে পরিমাণের শক্তি জানা যার, যেমন সামান্য লৌহপণ্ড একথান হছৎ কাষ্ঠ অপেকা পরাক্রান্ত হইতে পারে, কিন্ত লৌহ এবং কাষ্ঠ বিভিন্ন ক্রব্য, তজ্ঞনা ইহাতে যে প্রস্থা পূর্বের বলিলাম তাহা নির্ভ হইল। এইকপ শ্রী-রাবস্থা, বাহাবস্থা, ও শিক্ষানুব্যায়িক ইত্যাদি, ছারা মনের শক্তি সকল কপান্তর হয়।

প্রত্যেক ইন্তির যৎকালে প্রতান্ত স্বক্ষায়িক তৎকালে শরীরের এক প্রকার সাধারণ আকার এবং গমনের ধারা হয় যাহাকে ইহার স্বাভাবিক চিত্র বলা যায়, কারণ এক ব্যক্তির কোন এক ইন্তির উত্তেজিত হইলে শরীরের গতির বা অঙ্গ ভক্তের এক প্রকার ভাব প্রকাশ হয়, যেমন আত্মাদরপ্রবৃত্তি শরীরে স্কর্মায়িত হইলে শরীর সমান ও অটল হয়, ভক্তিপ্রবৃত্তি স্বক্মায়িত হইলে শরীর নম্র ভাব ও চক্ষুকে উর্দ্ধ ভাব করে। আত্ম যশপ্রবৃত্তি স্বক্মান্তিত হইলে শরীর নম্র ভাব ও চক্ষুকে উর্দ্ধ ভাব করে। আত্ম যশপ্রবৃত্তি স্বক্মান্তিত হইলে মন্তর্মান্তিত করে এবং শরীর ও উভয় হন্ত ক্মণ নিমু হইয়া দোলায়মান হয়, এবং শিক্তপ্রবৃত্তি স্বক্মান

^{*} शत थटल विरमस विवत्व मृष्टि कक्रम !

चिक रहेल मुख्य शका श्री रहा, अबर अना ना हिन्द अनुकान कहिला हिन्द अनुकान कहिला कि विकास कि वित्र कि विकास कि वि

মতিক অনুলয়নপে ছই গ্রাণ্ড ইয়া মন্তকের ভিতরে স্থিতি মান হওয়াতে প্রত্যেক প্রত্যে নমুত্ব ইন্দ্রির বিভিন্ন পরিমানে উরত আছে, তরিমিন্ত প্রত্যেক ইন্দ্রির বিভাবে দেখিতে পাওয়া যায়, কিন্ত ইতোমধ্যে কতক প্রতিন্ন একক, কার্ন বিভাবেশর মধ্যস্থলে পতিত ইইয়াছে। কোন ইন্দ্রিরোৎপতি বস্তু দর্শনে তাহার কিন্তা জানা যায় না, ক্তরাধ্ মন্তিক দর্শনে ভালার বা ভালান কোন অংশের কিয়া বোধ হয় না, যেমন মাংসপেনী দেখিলৈ বোধ হয় না যে ইহা জাবশাক্ষতে ক্রিকুলা ও সক্ষুতিত হইতে পারে, বা দৃষ্টিজনক শিরার গঠন দেখিয়া অনুমান হয় না মে ইহার ছারা আলোক মনোগোচর হয়।

शक् वा क्षित्र इहर है कि स नकल अधिक, अवर कू म है कि स नकल अपने उपनाह श्रकों ने करते, नका कथा है है कि स नकरने दिन का शित्र पार एक उपने हैं है कि स नका को हो ति के अपने हैं है कि स्वार के स्वार के कि स्वार के स्वार के कि स्वार के स्वार के कि स्

हे जिल्हा मकरलह शिह्मान मस्वरणाजारव विदर-हमा कृतिद्यम, व्यर्थार मीर्स्य अ श्रद्धः, हेहारमह वि अकात व्यवस्थारमध्य यात्र, मीर्म दा रुष्य अभीन, धदर नीर्म देश हुष्य अ अफ । मीर्स्य अस्ट अस्विक हरेरन नर्तन कियावान रयः, अवः छेट्ह अधिक रहेटन जात्ता अधिक वनवान रयः।

উন্নতি ব্যতিরিক ইন্দিয় সকলের দীর্ঘ প্রস্থা দেখিয়া বিশেষ বিবেচনা করিবেন, কারণ ব্দাপি কোন ইন্দ্রিয় ভাহার নিক্টবর্ত্তি ইন্দ্রিয় হইতে উন্নত হয় তবেই উন্নতি বোধ হয়, কিন্তু সালি-किंड रेलिय भदन मीर्घ ममजाव शाकितन मर्क প্রকারে মন্তকের দেই ুস্থান একসমান দেখিতে পাওয়া যার, এবং ইন্দ্রিয় সকলের গুণের সুমভাব হয়। আর রদ্ধাবস্থায় প্রায় মন ইন্তিয়ে সকলের ভেজঃ শেষ হইলে মস্তকের আরুতি ও পরিমাণ দর্শন দার। মনের গুণ নিশ্চয় করিয়া ব্যক্ত করা याह्र ना, काद्रव वाक् अन्द्र मर्नाटन न्युकाव तिथा যায়, কি**ন্তু ভিতরে মস্তিষ্ক ক্রমশ**া কর**্পা**য়, এবং মতকের অধি ক্রমে পুরু হইয়া আইসে, ত্রি মিত্তে কেবল মনুষ্যের যৌবনাবস্থায় প্রমাণ प्रितिम, कात्रन स्वरे**बर्श ग**तीस्त्रत् होत्र हिक महेक्य यन हेक्तिय प्रकलातक सानाहिका हेते।

মন্তকের কোন্ স্থানে কোন্ ইন্সিয় আছে ছাহা উভয় জাতি মনুযোর অধিকাংশে ভিন্নই জীবনা বস্থান জুরিং দর্শনান্তে জ্ঞাত হওয়া বায়। এই
মহোপকারিণী বিদ্যা কেবল যথার্থ প্রমাণের ছারা
দৃঢ় রূপে স্থাপিত হইয়াছে, জুজুন্য ইহা সভ্য কি
মিথ্যা প্রমাণ দেখিলেই বোধ হইবে, কিন্তু কিপিত
বাদান্ত্রাদ সর্বাতোভাবে অক্সার্হ হয়।

কোন বাজির মন্তর পরীকা করিবার কালে তাঁহার মন্তর্ক অতি সরল ভাবে রাখিয়া ইন্দ্রির সকলের ক্রমশং বর্ণনা করিবে, অর্থাৎ যাহার পরে যে ইন্দ্রির লিখিয়ালি তাহাই বাজ করিবে কিন্তু আরো দেখিলেই যে অথ্যে ইলিবেন এমত নহে। ভিন্তং ইন্দ্রির বিভিন্ন অংশে মন্তর্কে প্রসন্ম শাকারে কিনু লিখিত বিবিধ্প্রকার নির্পিত শক্ষ ্ষারা তাহাদের প্রসমতাকে পরস্পার ভুলা করা যায়।

অতিক্তা মধ্যম। প্রার অধিক। কুতা। প্রায় পূর্ব। অধিক। প্রায় কুতা। পূর্ব। অত্যন্তাধিক।

কিন্ত এই সকল ভাগ প্রথমতঃ শিক্ষাকারকের প্রতি কঠিন হওয়াতে ভাঁহাদের সন্তোবার্থে পরোক্ত চারিভাগ নির্দ্ধারণ হইয়াছে। অতান্তা-ধিক, অধিক, ক্ষুদ্র, এবং অতিক্ষুদ্র ॥

আন্ত বিশ্বাস আন্ত সন্দর্শনে প্রতীত হয়, অতএব যদি কোন মহাশয় স্থাং এই বিদ্যা সত্য কিবা

মিথা পরীক্ষা করিতে বাঞ্চা করেন, তবে প্রথমতঃ
মন্তকের কোন্ স্থানে কোন্ ইন্দ্রিমের স্থিতি, দিতীরতঃ তাহারা কি পরিমাণে প্রত্যেক মন্তব্য প্রসন্ধ
আছে, তৃতীয়তঃ তিন্নই শরীরাবস্থা সকলের চিক্ল
ভাত হইবেন, কারণ ইহাদের ইন্দ্রিম সকলের
প্রসন্ধতায় অধিক বা স্থাপ ক্ষমতা প্রদান করিবার
শক্তি আছে, এবং চতুর্যতঃ প্রত্যেক ইন্দ্রিমের স্থান
করিবার ব্যাহা এই প্রন্থে ক্ষিত হইরাছে,
সভ্যাস করিলে বিলক্ষণ কপে সকলেই স্থাং জ্ঞাত

হইবেন। প্রত্যেক মন ইক্রিয় মন্তিক্ষের ভিন্ন হান ৰূপ দাধন দারা প্রকাশ হয়।

এই গ্রন্থের অগ্রবন্তী ছবিতে প্রভ্যেক মন ইন্দ্রিয়ের সীয়হ স্থান বিভিন্ন দেখিবেন।

षिতীয় থগা

मन रेजिन्न मुक्टबुत विवत्र। 🦠

যন ইন্দ্রিয় সকল দ্বিঅংশে বিভক্ত হইয়াছে, কর্মেন্দ্রিয় ও জ্ঞানেন্দ্রিয়।

> প্রথম প্রকরণ । কর্মেনিয়া ।

যাহারা কোন প্রকার অনুমান করিতে পারেন।
এবং যাহাদিলের সদসং বোধ ও মনস্থাপ উৎপত্তি করিবার ক্ষমতা আছে কিন্তু সেই বোধ ও
মনস্থাপকৈ ইচ্ছা করিলেই অবিলয়ে উৎসাহ বা
পুনরাহ্বান করিতে অসাধা বেগ করে। তাতাদিগকে কর্মেন্ডিয় বলা মায়ন ইলাদের কেরল
ইচ্ছা করিবার ক্ষমতা আছে। কর্মেন্ডিয় দি অংশে
বিভক্ত হইয়াছে, ইচ্ছাইন্ডিয় ও চিয়াইভিয়ে।

১। ইচ্ছাইন্দ্রিরের বিবরণ।

যাহারা চিন্তা করিতে বা জ্ঞানোপার্জন করিতে পারে না, তাহাদিগকে ইচ্ছাইন্দিয় বলা যাব তাহাদের প্রধান কর্ম এই, যে ফেবল বিশেষ্থ 31 V

रेका अन्यान करत्र, भारे नकन रेजिय मनूरपार । अ अना जीरवट जारहा

>'। রতিপ্রবৃদ্ধি।

উদর কর্ণের পশা**ডে মূলদেশস্থিত অন্ধি তর্মা**। ভাগাস্থ যে ক্ষুক মতিক ভা**হাডে** এই ইন্দ্রির বর্জ-মান আছে।

् शहे द्वान विश्वक विद्युष्ठ, र्हेटल हेस्सिय अधिक ह्या

্র্ল ক্রিয়া বংশারকা করণ ইচ্ছা, ও বংশ -হজি ক্রী পুরুষের উভয়ের মনের আকাকলা ৮

শুরতার নতীয় ধর্ম প্রতিপালন করিবার ও কংমাক বশীভূত করিবার ক্ষমতা, এবং অনাসজি ও প্রজ্ঞানীকতা হয়।

অধিকতা অতিশয় কামাভুরতা এবং সর্বাদা ক্রী পুরুষ উভয়েরই উভরের সহিত রনালাপ করিতে ইক্ষা।

* এই প্রত্তের অগ্রনতি ছবিতে ৷ এতের অন্ত লেথিয়া এই ইব্রিয়ের স্থান লানিবেন এইরূপ ২ বিভীয়াদি অন্ত দেখিয়া ইব্রিয় স্থান নির্মকরিতে পারিবেন নিন্দনীয়ত। প্রভারণা করিয়া ক্রেকর্ণে রভ করণ অগম্যা গমন বাভিচার করণ, লাম্পটা পর স্ত্রী বা পর পুরুষ উভয়ের সহযোগ কর। ইত্যাদি।

পুরুষ জাতির এই ইন্দ্রিয় **অধিক** আছে । ২। শিশুপ্রবৃত্তি।

ক্তু মতিছের মধ্য স্থের উপরি ভাগে এই ইত্রির স্থিতি মান আছে।

মূলক্রিরা কনা। পুরের, প্রতি রেছ, শিক্ত দিনেরপ্রতি মেহ, পিতা মাতার স্বেহ।

জুততা বালক বালিকার এবং পশুও গাহিন শাবকের প্রাক্তি স্থাপ সমতা এবং ইডানিগাফে কর্মশা বাপে ব্যবহার করা, সংখ্যাদির প্রতি অপক্ষপাতিতা।

অধিকতা ক্র'পুঞাদির প্রতি আগক স্নেহ্, সন্তা-নাদির মায়ায় অভান্ত অগকত এবং তাহাদের ফুংবে ফুংগিত হওয়া। শিশু ও ক্রেহ্ পাত্র সকল লকে বাৎসল্য করা।

निन्दगीय्रण निष्ठानापितक वाजार जाराजाः प्रत्या भवर **जारापिताक** काम्भुद्ध कर्माद्य को होता विश्वन क्षांश हहेला व्यट्गिश हे अहा 🚉 ত্রী জাতির এই ইন্দ্রির **অধিক আছে**। ৩। সংযোগ**প্রকৃতি** 🔭

শিশুপ্রবৃতির ঠিক উপরি ভাগের্ড্র ইন্দ্রিয় বৰ্তিমা**ন আছে।**

মূল কিয়া অভিপ্রায় এবং বোধের বিষয় সক-লকে একেৰারে বা জন্মশংক্ষান করিতে পারা, এবং যে পর্যান্ত শেল না হয় মেই পর্যান্তই এক वियद्य **नियुक्त रू**हेगा:शाका। 👵 🕶

শুদ্রতা বিশ্ব করণ বিষয়**্সকল** এবং ক**র্মা** সকল চঞ্চল হয়, ভূতন্ত: এবং পরিবর্তন অভি-লায় করে, মনস্থ সকল চালনা ক্রুরিভে আক্রম क्य :

ष्ट्रिक्टा '८६ मत्म्रीटर अञ्च हर्रमा शास्क তাহার সমাধান মা ঝরিয়া অন্য ইকোন কর্মে নিযুক্ত হয় না আর মনোযোগ পূর্ব্বক কাষ্য কবিতে পারে।

निमनीत्रका वाश विद्व मिथिया स मःकात র্জনে তাহা উপেক্ষা করিয়া স্থান্তরিক অনুমানে ও ননন্তাপে অন্তন্ত হইয়া থাকা

रेष्ट्रारेक्टियुत्र विवत्रन।

ं क। युद्धानां सूश्रकथहर्डि।

সংযোগপ্রবৃত্তির উপরি ভাগে এই ইন্দ্রি স্থিতিমান আছে।

মূলক্রিয়া স্বদেশে থাকিতে বাঞ্ছা বা স্বত-বনে স্থিতি করিতে ইচ্ছা বা এক স্থানে বাস করিছে মতি বা নির্দ্ধারিত স্থান বাসনা করে।

ক্রতা কোন বিশেষ স্থান সমাদর করে না, হদেশ বা স্থভবন অক্রেশে পরিত্যাগ করে, এবং কোন স্থানের অনুগত হয় না।

অধিকতা পৃথিবীর মধ্যে অন্য কোন স্থান স্বভব নের ন্যায় প্রিয় বোধ করেনা, এবং বাদ স্থান ও স্বদেশ পরিবর্তন করিতে ঘূণা করে।

িনিদ্দনীয়তা সভবন পরিত্যাগ করিতে ঘ্ণা করণ, কোন স্থানে অসঙ্গতে পূর্বান্ত্রাগ বা স্থান শানুরাগ।

্র্পামাদিগের দেশস্থ ব্যক্তির **এই ইন্দ্রিয় অধি**ক আছে।

ও। বন্ধুত্বপ্রাকৃতি।

সংযোগপ্রবৃত্তির ছুই পাশে এবং শিশুপ্রবৃ তির উপরি ভাগে এই ইন্সিয় বিভিন্ন আছে মূলক্রিয়া ব্যক্তি বিশেবের প্রবি[®] পক্ষপাত। বন্ধুত্ব করণ ইচ্ছা, এবং স্কলের প্রতি দ্বেছ।

ক দ্রতা অপ্রথমী, ক্ষেত্ স্থান, অধিক আলা-গান বা বন্ধুতা করিতে অনিচ্ছ, আর ভাত্যদের নি'হত অধিক ক্ষতি স্থাকার করে না।

অ ধক**তা আলাপ করিতে ব্যগ্র এবং তৎপ**র চর, অ^কব বজুত্ব কথন তঞ্জন করে না, **এবং অ**ভ্যব্ত মতে। **হ**র।

নিক্রীয়তা কোন বৃদ্ধে বা আজীয় ব্যক্তির গোকান্তর হুইলে অধিক খেলান্থিত হওন, জার নিগুণি মনুষ্যকে সন্মান করণ, ও বল লাভি কিয়া বছ ব্যক্তির সহিত একত্র হওন বা একত্র করণ ইচ্ছা। ৫। বিপদভঞ্জনপ্রবৃত্তি।

বন্ধুত্বপ্রবৃত্তির পাশে এবং রতিপ্রবৃত্তির উপরি
ভাগে এই ইন্দির স্থিতিমান আছে।
মূলকিয়াল শরীর,বিষয়, এবং মন্স অপকার,
বিপদ, এবং বিপরীত উল্ভি হুইতে রক্ষা করণ।
কুর্মতা নির্বিরোধী, অসাহনী, ভীত, শক্রথ
সহিত আপত্তি না ক্রিয়া বরং অরণাপন্ন হয়।
অধিক্তা ধারণাক্ষম, সাহনী, এবং আপত্তি

कांत्रिक शृताकांक, विवास घरे। देख व। श्रांक्रिक्क हर्देख जाकाञ्की वंदर वोसामूचामी रहा।

निक्तनीयुज विवामी हरेए, आमान्द्र (म:कक्तमा क्रिट्ड रेव्हा, धर्मः दिश्राम पाइनामिक
रखन। एडअयी, ग्राक्तक्रूक ए कल रश्चिर।

आभाषित्य त्र समाग्र यो जित्र अहे देखिए वडाण्य आह्र

। नामकथार् ।।

কর্ণের ছিদের ক্রিক উপরি ভাগে এই ইনি স্থিতিয়ান আছে।

মাজিয়া পির্জন করিবার বাস্থা। হিংসক জান নাশ করিবার ইচ্ছা, এবং ভক্ষণ জনা জান হতা কর

কুত হ' শক্ষন ব্যক্তির ধাতন। দেখিতে পাবে না, বা কাহাকে খাতনা গোলান, আরু অপচয় করিতে মানস হয় না।

অদিকতা শর্মদণভয় সন্দর্শন করায়, আঘাও কবে, বা নাশ করে। তেলখী, বিরোধী।

নিন্দনীয়ং। শগত মনর্ধ জীব হিংসা ও নিষ্ঠুবভা, অশাম্য প্রতিহিংসা, জোগ, বাক্য এবং वार्वहात अनाम शहुका, आत कीव हका कतिए वांड्रन।

• ७ क। थामाथङ्खि।

क्टर्नेत मन्यूटथ एवं द्वानितक त्रभ वना यात त्महे शादन धरे हेक्सिय वर्डमान बाह्य।

মূলক্রিয়া শরীর ধারণ জন্য ভোজনেছা, व्यास थाना अवा विद्वहरू। कतिया शक्ष कता।

ক্ষুত। পরিমিতা হারা। স্থাদ্যভক্ষক, আর क्रक व अ शादन माधुर्या धवर सन्माशियुक्त ।

অধিকতা স্থাহনতোগী, অত্যন্ত শ্বাভ্ত, এবং (७, ४२ कति**रः जाङ्गा**निङ।

निन्हनीय विद्वाला अर्थ मानक अरा तावशातकाती, बात जकन कर्तान या भाग कत्रान वा वुम त्नवत्न जानमा हीन।

প্রাণপ্রার ডি

মন্তিদের অধোভাগে এই ইক্সিয় বৰ্তমান জাছে, कीविक मादन इंशात मन्मर्गन रुव ना।

মুলক্রিয়া জীবিভাবস্থায় কাল্যাপন করবে रेका, वा चार्जाविक बाज तका कता रेका। क्रका अभन्न रहेट पृश करत, बीविट वा মবনে অথত করে, জার কেশাবস্থা হইলে মরিতে। ইচ্ছা করে।

অবিক্তা আনেষ ক্লেশ বিশিষ্ট ইইলেও পঞ্চর পাইবার প্রিছা, আর ভূবিষাতে জীবিত থাকিতে দুচ্তর আগাঁ।

থাকিতে দৃত্তর আগোঁ।
নিদ্দারতা বিনাশহুইতে অভান্ত ভয় পার,
এখণ উহাংশ এক্ প্রকার বারু রোগগ্রস্ত করিতে
পারে।

'१,। शार्शनेक्षवृद्धि।

 নাশকপ্রবৃত্তির উপাব ভারে বিপদভঞ্নপ্রব তিয় সপ্রথে এই ইল্লিয় স্থিতিসান, সাহে।

भूगक्तियास तिशाभन ताथितात् दाश्या ७ कम-ठा, धवर अगामा हेल्लिस भ्रक्तात् श्रीष्ट्र इतित्र भयम काती।

ক্ষুত্রতা সরল ও নির্মাল, বা প্রভারকের অধীন ইয় এবং যে কপ মনে উদ্য় হয় সেইকপ্ট কথান প্রকাশ করে, ৩ যে কপ বোধ করে সেইকপ্ কর্মত করে, অর্থাৎ আন্তরিক বা বাহ্যিক সমান ভাব হয়।

व्यक्तिका विकास कार्य कार्य

কাশ করে, চুউভাপূর্বক মনের মানন সকল পূর্ণ করে, প্রবস্থনা করিছে ছৎপুর হয়।

নিন্দনীয়তা কাম্পনিক ব্যুবছারী, মিধ্যা-বাদী, প্রতারক, মুঠ, হিশ্বাসঘাত সার অপ্রতায়ী ইত্যাদি।

्रे भोगोनिरवंद्र रिनष्ट राजिन नक्र तत्र अहे हैक्टिश क्षेत्रत श्राह्म ।

৮। উপার্ক্তনপ্রবৃত্তি। গোপনপ্রবৃত্তির অত্যোপরি ভাগে এই ইন্দিয় বর্তমান আছে।

মূলক্রিয়ার বিষয় উপার্জন এবং ভোগ দখল স্বিবার বা দক্ষর করিবার ইচ্ছা। 👍 💛

্জুদ্রতা প্রপ্রায় করে, দ্বের মূল্য অব-হেলা করে, বা বৃদ্ধাবস্থার ও পীড়িভাবস্থার নিমি-ভে উপায় করিতে হৈয়জ্ঞান করে।

অধিকতা ধনোপার্জন করিতে অল্রান্ড,সক-ল বিষয়ে পরিমিত ও নিয় মিত বারী।

নিন্দনীয়তা কোন সম্পত্তি বা ধর্নাপা ক্রেনে অপরিমিতাকাজ্জা। স্বধ্ম কোতী, রূপণ, অপহারী ইত্যাদি।

के। **विश्वा**रक हिंचे

্ডিপার্জনপ্রবৃত্তির আজে খালপ্রবৃত্তির পাথে এই ইন্দ্রির বর্তমান স্বাচ্ছে।

পুলজিয়া নির্মাণ করিবার বাঞ্চী, শিণ্প কর্মে পট্টতা, ও কোন প্রকার যন্ত্র গঠন করিতে নিপ্রণতান

কুত্রতা কৈনে প্রকার অন্তর্গাদি বা আধান ন পাত্র কুঁৎসিত বা অসভাতা ৰূপে অব্যবসাহীর ন্যার ব্যবহার বা নির্মাণ করে, শিশ্প যন্ত্র সম্প্রীয় কর্মকারী হইতে স্থা করে।

অধিকতা শিণ্প যন্ত সহস্বীয় কার্যা নির্বাহ কুরিছে বা কে ন বস্তু নির্মাণ করিছে অধিক শারীরিক গরিঅম করে, এবং চিত্রকারী, খোদ-কারী, যন্ত্র নির্মাতা বা গৃহাদি নির্মাতা, ইত্যাদি কর্মের যে কর্মী বৈই সকল বাবসায়ীদের এই ইন্দ্রিয় অত্যাবশাক

নিন্দুনীয়তা শীষ্ট করিছে বা বিনাপ করিছে কোন প্রকার জত্ত রিন্দাণ করণ, এনত কোন জত্ত বা যত্ত গঠন করণ স্বাহাতে হানি হইছে পারে।

रें। विकार सिटमक विवत्र

এই সকল ই ক্রিয় ইচ্ছাই ক্রিয়ের সহিত একত্র হইলে এক প্রকার মনের উদ্বেগ বা টেডনোর চিব্ল দেখিতে পাওয়া যায়, ইহার সংখ্যে কতক ক্রিন মন্ত্রেতে ও অন্যান্য জীবেতে স্থিতিমান ক্রিন মন্ত্রেতে ও অন্যান্য জীবেতে স্থিতিমান ক্রেতে এবং ক্তকগুলি কেবল স্বতন্ত্র সংগ্রম্ম ব্যেতে আছে, একারণ চিন্তাই ক্রিয়কে নীচ ও মহৎ বলা যায়।

> থে সকল চিন্তাই জিল্ল মনুষ্যেতে ও অন্যান্য জীবৈতে আঁচে ভাষার নিবরণ !

১০। ভাগে। দরপ্ররাতি :

স্থানানুগতপ্রতির উপরি ভাগে যে স্থানে।
শেখা গাকে সেই স্থানে এই ইন্দ্রির স্থিতিমান।
আছে।

अनिकशः चाषा माना कहा, बाद्य काथीन छ। धर करने पूछ दाधिए वाङ्का कहा, जात मर्गामा, भीतव, वा मधान मर्व त्यां छहान कहा।

কৃত্ত স্থাং অংবাগ্য ও নীচ বোধ করে। শূনতিয়ানী, মধ্যাদায় শবং ভারিছে অভাব হ্য। অধিকতা খ্যাত্যাপর হইতে গুরুতর কেটা করে, মর্যাদাবত ও অহস্কারী, স্বরং আবদ্ধ কর্মে প্রবৃত্ত হয়, আর শাদন করিতে বা অধ্যক্ষত। করিতে ইচ্ছা করে।

নিন্দ্রীয়তা আত্মলাঘা সাথারের, আত্মনত সংস্থাপনের নিন্দয়, ও গবিকে । কুলীনাডি মান এবং প্রজার প্রভূত্ম বাঞ্জা করণ ।

,>> । **আছা**যশপ্ররুত্তি।

্রি আত্মাদরপ্রবৃত্তির ছুই পালে বন্ধুত্বপ্রবৃত্তির উপ-রি ভাগে এই ইন্দ্রিয় বর্তমান আছে।

মূলক্রিয়া অন্যের সহিত ভুলা হইবার বাস-না, যশ উপার্জন করিবার ও জেও হইবার ইক্র কোন ব্যক্তির স্থাভাবিক গুণ জন্য সন্মান করণ।

স্কুত্রতা অনোর প্রাদশ জ্ঞান্ত করণ, মিন্ট বাক্য কহিতে ও সৌজনা করিতে না জানা। পরের ধারা, বাবহার, এবং সভাতা মুণা করণ।

অধিকতা ব্যাপিত হইতে বাঞ্চা, প্রশংসা ও নিন্দার জ্ঞান,প্রশংসা ও উপাসনা কর্মণ স্বভাব। ব্থাভিমান, এবং স্থালতা।

मन्द्र नात्रन्ध ह।

নত্তির বী**হ্ন করণ, স্বভাগ প্রকাশ করণ, স্তান্ত** সমাদর করণ।

১২ । সত্ত্তাপ্রস্তি।

আন্ত্রমশ্প্রবৃত্তির পাত্রে বন্ধুত্প্রবৃত্তির সন্মূত্র এই ইন্তিয় ছিভিযান আছে ।

সুনানিক প্রাক্তির সাহবান ছঙ্গ, বিপদ বিরু দ্বে অত্যে সাবধান হ'ওল, সন্দেহ করণ, ভয় করণ।

মুক্ত আনাবধানতা হঠাং বিপত্তি **ঘট**না। ভাতিরভা ও অশ্বরিণামদর্শিতা। ত্রংনাহ্ন এবং আনহ্যাকারিতা।

ক্ষিকভা নিদেহ বা আশস্কা করণ, সাবধান হত্য । এই দ্বিতি ও এবা বিষয়ে মনোযোগ, িপদ ঘটিবুলে কথে জানিতে পারা, সদা অস্থি-রক্ষ ও অভিচয়।

্নিক্ত বৃত্তা প্রভাৱ ভীর স্বভাব, মিধ্যা ভরে অভ্যন্ত ভাবিত স্থান, প্রভাবসংহীনত।।

অ মাদিগের দেশস্থ্যক্তির এই ইন্দ্রির অধিক। প্রবল আছে।

২৩ | দয়াপ্রকৃতি !

उषातरकात गणुरथ धरे रेतिन । श्रिंचिमान शारह ।

মূলক্রিয়া শনুবা জাতিকে স্থা করিবার ইচ্ছা, সাধারণ দাভব্যতা, সরসাত্তংকরণ। উপকার ও দ্যা প্রকাশ করণ।

শুক্রতা বার্থের নিমিতে কার্যে প্রকৃতি।
নাতব্য করিছে না জানা, পর ছ^{্রা}নোচন করিতে
কঠিনাসংকরণ, এবং নর্যে লোকে প্রাত্থনা।

ফ্রিক্টা নিংস্বার্থতা, দয়। প্রকাশ, নাতৃত্ব, ছুংবিতের প্রতি স্নেষ্ট্, অপরিচিত ব্যক্তির প্রতি মঙ্গলাকাক্ষা, আতিখ্য প্রকাশ করণ।

নিক্দনীয়ত কিয়ার নিনিত্ত অপর্যাপ্ত ব্যয়-অপবার্থ ও একাদিক্রমিক দি করণ, মিব্যা তুঃখাবিত ইতিহাস অবিশোদিশাদ করণ।

> যে সকল তিভাই জিয় কেবল মনুষ্ঠেতে আছে। ভাষার বিবরণ।

১৪। ত ক্তিপ্রবৃত্তি।
বিদারকেতে এই ইন্দিয় বর্তমান আছে।
মূলকিয়া ওক্তর বা মান্য করি।
সমাদর করণ, নত্রতা হওন, বা মান্য করণ
স্ফুত্তা কোন স্থাপিত বা নিয়মিত রা এটা

আহিকাদি ধর্ম কর্মের প্রতি স্থাপ মান্য করণ, ক'র্কশ্য, অবাধ্যতা ও রাজ বিরুদ্ধাচারন

অধিকতা যে সকল ব্যক্তির উপাধি বা বহ আধিকা এবং প্রধান গুণ আছে তাহাদিগের মান্য করণ, পরমেশ্বরের অর্জনা করিতে গদারত থাকা। নিদ্দলিকত কিশিত ধর্ম উপাসনা করণ, অবিবেচনা পূক্ষক কোন মতে বাগ্র হওন, ক্ষমতা-পদ্ম ব্যক্তির নিকট সম্প্রভাও অধীনতা বীকাব করণ।

वालकविद्यात अहे शिक्स श्राम निम् श्राकाटण स्थापा इत्र, अम्ब स्थानक मृष्टीख (मथा निम्नाट्स। ১৫। मृष्टाक्षत्र्रीख ।

এজরদ্বের পশ্চাড়াগে আত্মানরপ্রতির সম্পুরে এই ইতিয়ে বর্ত্তমান মাছে।

মূল ক্রিয়া তিমুনজ্যের নি**শ্চিতত্ব, অবিরত চেক্ট**। দুচুপ্রতিজ্ঞা, নিষ্কারণ **স্বভাব**।

ক্ষরতা ভরুগা যোগ্য নহে, মনস্থ পরিবর্তন করে, অক্লেশে মনস্থ রোধকরে, অপ্রবীশ হয়।

অধিকত; হির সভাব, মনস্থ ও বাসনা ত্যাগ করিতে অনিজ্ঞ্জুত এবং কাঠিনা প্রতিজ্ঞা। নিন্দ্রীয়তা প্রত্যাভূততা, নির্বেধিতা, অনোর নিষেধ অঞাহা করণ ইত্যাদি।

১৬। হিতাহিতবিবেচনাপ্রবৃত্তি।

मृत्रकाञ्चेत्रस्थित प्रदेशादक वाष्ट्रगण अवस्थित त्रम् दक्ष भारे हैक्सिय वर्षमान चार्ट्स

মূলকিয়া বিনীত সভাক মথার্থাযথার্থ নোধ প্রাকৃতি, স্তনীতির যোগাতা ও মিল জানগোচর করণ।

কুরতা ভিদ্ধেশ্য কারণ অত্যাপ থেদ ও অনুতাপ করণ। স্থনীতি বা ধর্ম বা কর্ত্তব্য কর্মের প্রতি সামামানা কুরণ।

অধিকত। কোন কর্মে প্রবৃত্ত হইবার পুরের কন্দ্রবা কি না ইহা বিবেচনা করণ, মহন্ত ও যাগা-বিহতা। সত্যতা, ধর্ম প্রতিপালন, নৈষ্ঠিকতা এবং শ্রহা এই সকল বিষয়ে ননোধোণী ছওন।

निक्तियञ्चित्र कर्डवा कर्ट्य भाषाना जान्ति इहेरल ष्यञ्जल राज्य कत्रवा क्षेत्र

>৭। প্রত্যাশাপ্রবৃদ্ধি।

ত্রশারস্থার ছুই পাথে বিবেচনা প্রবৃত্তির সম্পুদ্ধ

মূলকিয়। অতে কাশা করণ, ভবিষ্ণতে হুখ ও সকল ভরনা করণ, ভ্রসাযুক্ত হওঁর।

কুদ্রত। নিহতে স্বসাহনী, প্রিয়নাণ,ও নিরাশ হওন, অধিক উদ্বোগ কা চিন্তা না করণ।
ভাষিকতা উল্লামিত ও প্রকৃত্ত হওয়া, ভবি-

वाटड कि तो स्टब्स अमेड विश्वाम करने, छविवाद श्रुथ विश्वाम मध स्टेडा वर्डमान क्रिया खूनिसाधाका।

নিন্দনীয়ত। মিখ্যা আশা, তবিষ্কাহত বিশ্বাস, জুরা খেলা, কুসনস্থ করিতে প্রবৃত্তি, মনেই নামা প্রকাব বিশ্ব কপেনা করিয়া চিন্তা করণ, অসম্ভব চিন্তা।

১৮। আশ্চর্যাপ্রবৃত্তি।

অনুকরণগ্রন্তির* পাস্থে এবং প্রত্যাশাপ্রবৃ-ভির সমাধে এই ইন্দির বর্তমান আছে।

মুলক্রিয়া অভুড, মুতন, চসৎকার, মনোহর, ও অসাধারণ বিষয়ে বিশ্বাস করণ।

ক্ষুদ্রভা কোন অসম্ভব বিষয়ে অপ্রভাষ, প্রভাষ করিবার পূর্বে প্রমাণ দর্শন, কোন বিষয়ে

[🗯] ৩৭ পত্তি সনুজরণপ্রবৃত্তির স্থান দৃষ্টি বস্কুলী

বিশেষ প্রমাণ নর্শাইলৈ দত্য বেশ্ব করণ, ভাবৎ আক্র্যাবিষয়ে সন্দেহ করণ।

সাধিকতা অসাস্তব চিত্র উপদেবতা ও' শুভ বিৰশ্বিশাৰ করণা ভরানক কথোপকথন বৃদ্ধি করণ ইত্যাদি

निक्ति प्रकार वेखुक निर्मार वे क्या, यातृ निति केलेटक्वेडा क अख्यक काल कर नवल अख्यक श्रीक माना नजन। स्टूबन वर्डमान हान्छ वाक्शित वा युक्तिया विभाग वृक्ति अछाउ आला

১৯। করিতাশক্তি বা সৌন্দর্যপ্রবৃত্তি। উপার্ক্তনপ্রবৃত্তির উপরি ভাগে এবং আলহ্যা প্রবৃত্তির শাসে এই ইন্সিয় বৃত্তিমান আছে।

মূলক্রিয়া সৌনুর্য্যে, প্রেমাকর্ষণ, এবং স্বাভাবিক ও ক্রিম কবিভাষোগ্য জন্য প্রতি আব-লোকন করণ । পূর্ণস্ব, স্থামতা, এবং কোমলস্থ ইচ্ছা করণ।

ক্ষতা উত্তম শভাব শূন্যতা, কবিতা রচমা বা-পাঠ করিতে অনেভা নিক্ষ ও সামান্য কর্মে উৎসাই করিতে পারা। অধিকত। ভারুক, মান্দোন্ত ত বিষয় সকল লকে সোধনকেরণ, কবিতা রচনা করণ, উভ্যাত। বাঞ্চা করণ।

নিশ্নীয়তা সনৈর র্থা উদ্বেশ জীরনের কর্তুবা ও যথার্থ কর্ণো নিযুক্ত না হইয়া শিখা। ভাবনা সাগরে সংগ্রহণ

ा २०। श्रीतशामक्षद्धि।

আল্যাপ্রতির ও কবিতাশক্তি বা কৌল্যা অংভিন সম্বৈথ এই ইতিয়ে বৰ্ডমান আছে।

মূলজিয়া অমলিন ও বিপরীত ভাব জ্ঞান গোচর করণ কোন দ্বোর এবং গুণের পরস্পর একা দর্শন

ক্ষণ পরিহাসজনক বিষয়ে সুন্প এতাতি, কদাটিং আপুনি কৌছুক করণ বা অন্যে কৌছুক কানিল গুরী হওঁ পদার্থের কোন অবস্থা কিয়া কল, এই ছুই, বিষয়ের পরস্পর সমন্ধ বা সাদৃশ দেখাইলে ভ্রান্তি জন্মাইতে পারে।

অধিক্তা উপস্থিত মত উত্তর করিবার ক্ষমতা, উপস্থিত বক্তা শক্তি, মনোরঞ্জতা, বাস্তর্জা বিভা প্রং হাল্যোৎপাদকতা হয়।

२>। अञ्चलत्। श्रह्णि।

में शिक्स कर नार्ष धरे हैं किस वर्डमान परहा

্র্যুক্তিরা* তেওঁ অন্যের চরিত্র, অফ ভঙ্গ, ও কর্ন্য শক্তের সদৃশ্ করণ।

ক্ষতা। নৈপুণা ৰূপে আনুৰ্শ করিতে অক্ষম হয়, প্ৰভাৰ ও আত্ৰণ অসাধারণ এবং মুলীভূত হয়।

. अधिकार प्रांदिशी, विकाशी, उ श्रांत्रहा-नक रहें एवं शांत्रश हा। विकिथ प्राप्त ग्रंदहात उ त्रीकि अर्ग कर्त्रा

নিক্দনীরতা উপহাস জন্য ব্যঙ্গ, বহু রূপ গরেল উড়ামী, এবং বঞ্চনা বা মন্দ করিতে কোন প্রকার বেশ গারণ কর্ম

क्ष्मणीकरा, क्षमार देखि एवं मून कोच रा देखिएवत स्थास सम्बद्धाः

[ो] चुन्ना अथीर दे जित्र कृत हहेटन ता क्षेत्रात नकन इत्।

[🛊] अधिका अधार अधिक हहेरन स शका नकत हा ।

⁾ निक्रमित्रका कथांद समिद्धियम् कार्यः सेदशय देशः।

92

अहे नकेंग रेजिय मेलूबाटक ७ विनाना नीवटक श्रूर मेटनाशंक द्वांश नकन अवर वाश वह नकनं क्रान्तशापत कताम, रेराट्रित क्षयान कर्य अरे द्व वह नक्ट्रित शामिष अवश्रक करान अवर कारा-भित्यत छन ७ भन्न नक्क कर्मारेस द्वास हैरा किन अर्ट्रित विक्क हरेसाटक, वाश्रेकिस, द्वायन-रेजिय, ७ प्रसुमान हैकिस

🤰 राष्ट्रेस्टिएसँत विवतने 👫 🐃

ভানী বাক্তি সকলে বলিয়া থাকেন যে বাছাইন্দ্রিয়ের দারা প্রথম অনুভব আমাদিনের সনোগও হয়, ইভাতু মারে রাছাইন্দ্রিয় সকল পূর্ব হই ক্লো
মনের ইন্দিয় সকল পূর্ব হয়, কিন্তু ইহা অত্য নহে,
কারণ অনেকানেক জীবের বাছাইন্দ্রিয় মন্ত্র্যা
হইতে অধিক পূর্ব ও শক্তা যিত ছবাচ ভাহাদিগের বৃদ্ধি মন্ত্র্যা হইতে অধিক নহে। অনেকে
দর্শন করিয়া থাকিবেন যে জ্যান্ত্র ও বিধিন রাক্তি
কোন প্রকার উপ্রেশনা পাইয়া তাহাদের নাল্যা-

वश्च भविष कर्णासिद्वत के ज्ञादनिस्तुत किया অক্রেশে নির্বাহ করে 🎼

वार्यहे जिन्न स्कन देवन मुख्येत मा ं बाक् दख्र गठेन अख्रक हुईसी मन्हिं जिस न दलन অনুধাৰন নৈরায়, তাঁহারা বাছবন্তর স্থায়িত্ব, বা कुन अंतर मञ्ज जानिएक नाइत ना, त्यमन वक्तू वर्न নির্ণয় করিতে পারে না, ফর্ণ কখন স্বর বোধ করিতে ুবা উৎপত্তি ক্রিকে বা কোন কথার রচনা করিছে পারে না, নারিকা সৌরভেকে ভান স্মরণ রাখিতে পারেনা, অথবা স্পর্শ পশু পদী প্রভৃতিকে স্বাভা-বিক আম করাইতে বা মনুষাকে শিপ্প কর্মে রঙ করাইতে গারে না।

वाश्याखत * बाता कमना छेलार्जन इस, अह অমুভব মিথ্যা, কারণ অনেক জীবেরি বাহা অঞ্ আছে নে সকল ভিন্ন২ কর্ম করিবার নিমিত্তে रुके ररेतारह, दिखे छारीरमत चीवर कर्य कान हिंद्र मिथिए नी अर्था यात्र मी, समन यान-

করিলে শীত দুরীভূত করিতে পারে কিন্ত তাহা
দিগের এত অধিক জ্ঞান নাই।কীট পতঙ্গাদি এবং
কোনহ মৎজাদি সকলের স্পর্শ করিবার অধিক
উত্তম যন্ত্র সকল আহে তথাচ তাহাদের ক্ষেত্রকংখ্র কিছুই বোধ নাই।

বাহ্য যত্ত্ৰ সকল এক অকার থাকিয়াও ভিন্ন কার্য্য করে, বেমন খরগোবের ও শশকের এক প্রকার চরণ থাকিলেও থরগোষ কেবল মাঠ সব্যে বদতি করে, এবং শশক গর্জ মধ্যে স্থিতি করে, **এবং** जनगाना পु**छ স**कटनेत जिन्नेर यदा शाकिटेन अ এক প্রকার কার্য্য করে, যেমন হস্তির গুও মনুষ্য ও বানরের **হতের ন্যায়** কার্য্য করে। বানুরের হস্ত কাঠবিড়াল ও শুক পাকর চরণ অত্যন্ত অতুলা কিন্ত ७ हेनकन यटखब बाबा है हाता नकटन है थाए। ज्वा ধারণ করিয়া ভক্ষণ করে। ফলডঃ যদিস্থা**ৎ মন্তু**ব্যের হত হইতেই শিশ্প কৰা উৎপত্তি হয় তবে কি कात्रत्व हिळकात्री, त्यानकात्री, अ बनामा कर्म-कतिता उँ। हारमत मनः छाङ वा इन्छ देरेल हर হইতে স্বীয়২ কর্ম করিবার যন্ত্র ক্ষেপণ করে? আর कि अकारतहेता महत्ताता नक्त वा अनमा

দারা চমৎকার এবং উৎকৃষ্ট কর্দা উৎপত্তি করে? এবং কোন্ ব্যক্তি হুস্তের গঠন সন্দর্শন করিয়া শিম্পকর্দোর পারগতা নির্দ্ধারণ করিতে পারে?

বাহ্য বন্ধ্র সকল অত্যন্ত আবশ্যক ও ব্যবহার বোগ্যা, ইহাদের সহিত অন্তরস্থ গুণ সকলের সহজ্ঞ আছে। বাহ্য বন্ধ্র ব্যতিরেকে অন্তরস্থ গুণ সকলের ক্রিয়া প্রকাশ হর না, যথা মাংসাহারী জন্ত সকল তাহাদের স্বীরহ দন্ত ও নথাবাত ব্যতিরেকে নাশ করিতে পারে না, কিন্ত ঐ নাশ করিবার ইচ্ছা মনং হইতে উদয় হর, একারণ বাহ্যস্ত সকল অন্তরস্থ বাঞ্জা সকলের কার্যা নির্বাহ করিবার নিমিত্ত হইয়াছে।

বাছই ক্রিয়ে সকল সর্বাদা প্রথম ই জিয়ের সহিত কেবল যদ্রের ন্যায় নিযুক্ত হওয়াতে ভাহা-দের ক্রিয়া সকল দিভাগ হইয়াছে, বিলয়ন ও পবিলয়ন। বিলয়ন ক্রিয়া রাজ্যিক সাহায়্য ব্যতি-রেকে কেবল বাছই ক্রিয়া ছারা নিজাল হইছে পারে না, ক্রি জবিলয়ন ক্রিয়া কেবল বাছ্-ই জিয় ছারাই নির্বাদ্ধ হইয়া থাকে। বাছই ক্রিয়া সকল এমত নৈক্টা ভাবে গভরম্ব ইন্দ্রিরের সহিত সংযুক্ত হইয়াছে যে তাহাদের বিশেষ ক্রিয়া বা অবিলয়ন ক্রিয়া চিত্র করিয়া বাক্ত করা অত্যন্ত কঠিন। ইহাদের মধ্যম ক্রিয়ার জন্য এমত নৈক্ত্রীত তাবে সংযুক্ত হওয়াআরক্তক, ষেমন স্থানপরিবর্তনশিরা ও স্পর্শাস্ত্রী অন্তর্গন্থ ইন্দ্রিয় সকলকে সাহায্য করে, স্থানার মন্তকে স্থিত সমস্ত ইন্দ্রিরের সহিত সংযুক্ত আহে।

তথাত মনতত্বজ্ঞ মহানয়েরা অবিলয়িত বাহ্
ইক্রিয় এবং প্রধান অন্তর্গুইক্রিয় সকল বিশেষবপে বাক্ত করিতে চেন্টা করেন, কিন্তু ভাঁহার।
অবশু শরণ রামিরেন যে প্রত্যেক রাহ্ইক্রিয়
কেবল এক প্রকার অবিলয়ন ক্রিয়া নির্বাহ করে,
প্রত্যেকের বিশেষ শক্তি আছে, এবং প্রত্যেকের
ক্রিয়া ভাহার নির্বাহত বিশ্বমানুসারে প্রকাশ হয়।
ইক্রিয় পরিপক্ ইইলে জাছাদের ক্রিয়া সকলও
পরিপক্ হয় এবং ইক্রিয় পীড়িত হইলে ক্রিয়া
সকলও তদমুর্কপে পূর্ব চাল্ডী থাকিলেও বিশ্বমান্ত্রীল হয়।

वाष्ट्रक्तित नकरलत शतन्त्रीत नःरम्परन्त विव-

রণ অধিক কথিত হইল, কিঙ্ক ইহাতে এমত বুঝার ना एवं देवान वाश्रदेशिय जना वाश्रदेशिय हरेए স্বীয় ক্রিয়া নির্বাহ করিবার শক্তি উপার্চ্জন করে! জানী ব্যক্তিরা বলিয়া খাকেন যে এক যুটি জল-मध कतित्व बक्त करल मुक्ति रंगाएत रहा ने चा, शतस म्प्रान महल त्याप हुन । क्छ मन बाता विश-রীত জানিয়াও চক্ষু দ্বারা বৃষ্টিকে বক্র বোধ করিবে, स्टर्कु जन मृद्धा अञ्च (तथात वक् र्रेवात कातन না জানিলে ভাহা বুঝিতে পারা যায় না। প্রত্যেক वाश्रेक्तित अना वाश्रेक्तियात दिनाम उर्शिक করাইতৈ পারে না, বা অন্যের প্রিক্ত বস্তু আমা क्तिशदक काड कतार एंड शांदत मा, वा वाश वस्तुत অন্য গুণ পরিচিত করাইতে পারে না, কিন্তু रेराटम्स श्रामान महत्यायम क्रमण आहर रेरा सर्थ श्रीकात कतिक। भई श्रकादत वक्दः न्यान नः दर्भाषम कतिएछ शास्त्र, **अवेद न्यार्ग रुक्तुः** नः देना-ধন করিতে পারে । যদিতাৎ অন্য কেন্দ্র আমাদের অজ্ঞানাৰস্থায় এক খণ্ড পাতলা কাগজ আমা-निर्वत हु रे अक्तीत महा ब्राट्य, ज्रव आमत স্পর্শ ধারা বোধ করিতে অক্ষম হইব এমং

হুতে পারে, কিন্তু পরে ইছাকে স্কর্মন করিব।
অনেক জরল জবা জালের নাার বাধ হর, এবং
পরি বা স্থিতির ইছাকিবের নির্ম করিতে অসমণ হয়, ক্রিন্ড গোণ বা রসন ইলিয়ে ইহানের
ডল প্রতেদ এক কালে বাক্ত করে। এই প্রকারে
বত অধিক বাজ্ইলিয়ের বিশেষত চিত্র বোল
করিবার স্থীয়ং ক্ষমতা আছে, ৩৩ অধিক পরত্প বের সংশোধন হয়, তলিসিতে বাজ বস্তু ক্ষম
রপে অবগত হুইবার জন্য সকল বাজ্ইলিয়ের
লাহাম্য লার। তাহাদের পরীক্ষা করিবে, কারণ
বে গণ গ্রেষ গোচর না হয় সে অবিলয়েই
অন্যের গোচর হয়।

ত্বনিজিয়।

मन्दः वाक्षरेजित्र अट्यका रेश हरू, कात्र विकार ने नेट्र के जिल्ला काट्र विकार नेट्र के जिल्ला काट्र क

ताशरे विदेश विवतः।

उन्दरनिक्यः!

এই ইক্লিয় ছারী কেবল আয়াদৰ বৈধি হয়। খাদ্য দ্ব্য ছারা দৈহের ধারণ ও র্দ্ধি হয় ত্রি-মিত এই ইক্লিয় অত্যন্ত আবিশ্যক।

ছ্রণে ক্রিয়।

এই ইন্তির ভারা সৌরভ বোধ কর, ইছার অন্যান্য কার্যাও আছে, যথা দূর হইতে কোন কব্যের আধের ভারা মনুষ্য ওপও তাহার ভারিছ জানিতে পারে, আর পশু সকল আপন্য খাদ্য জব্য গ্রহণ করিতে এবং শক্রু বা মিত্রের নিক্ট আর্থান জানিতে পারে, যথা "পশুর্গান্ধেন পশুতি"

ध्ववद् शिक्ष ।

এই ইক্রিয়ের দার। শব্দ বোধ হয়, এবং ইহা অন্তরস্থ ইক্রিয় সকলের অধিক উপকারক, বিশে-বতঃ কর্মেক্রিয় সকলের উপকার করে।

मर्भातिस्य ।

এই ই ক্রিয়ের দারা আলোক ও বর্ণ এবং ইছা-দের অধিক রা স্থাপ প্রকাশ দেখিতে পাওয়া দায়, আর মনুষ্য ও পশু পশ্চী দুরস্থ বস্তুও দর্শন করে ्। देवन्थन हेलिदशत विवृत्रन्।

बहूँ मक्न रेक्सित महादारक धरः शश्चे पुक्ति मरा-लटक व्यवामा रहत हिलि छ। उन्तामा व्यात । बह् बहु मंदरतात विद्यान । या ज्ञानिक धर्म ए जिल्लात विद्या संघन्न (वाथ केतियात सांकि अनाम केतिए क्रमके व्यादहा

্ । পার্থকার্ডি।

ক্রমধ্যক নাদিক: ্লোপরি এই ইন্দিশ শ্বিভি-নান আছে।

সুসজিলা—এই হৃতির মধ্যে যে নকল জীব একড় আন্ত ভার, দিগকে ভিত্ত করিয়া জ্ঞান পোচর করণ।

কুদ্র হা বিশ্বহ করিয়া অবলোকন করণে অনামর্থা, পৃথক্থ বিষয়ণ কারতে বিরক্তি, এবং বিজ্ঞ করিয়া সায়সংগ্রন্থ করিতে কঠিন বোধ ধ্যা

অন্কিতা কোন ক্রেরে সরণ ও বোধ দেনতা অধিক হস, দুটি করিবা মাত্র ভিন্ন ২ বস্তু দেনিতে প ওয়া যায়। বিভিন্ন বস্তুর, অনুস্থানা কাত্রী, ও জিজাস্থ হয়।

२७। साजिइवि

तीतक। इत शादा नगर कार नगरक कर रेखिन चर्डनाम कार्ड

্ৰিক স্থান অধিক স্থান হতনে হাজেয়ের প্ৰাৰ্থক হ হয়, এবং নয়ন অনিকটবৰ্ডি হয়।

্মূলকিয়া সিমা বোধ করণ, কোন জিবোর নঠন হা আক্রার অবধান করণ।

ক্ষতি জীব সকলের এবং তাহানের শ্রী
রের ভিন্ন স্থানের শেশীপুরেক স্থানিলন জ্ঞাত
হইতে স্থান্দ হয়, গঠনের স্থান্দ বিশে শক্তি হয়
স্থানিক তা যথার্থ গঠন বোধ কারতে পারেক
নমুব্যের বদর ও দ্রব্যের গঠন স্থান্দ ক্ষিত্ত ও
স্থান্ধ ব্যাহিত পারেক।

২৪।পারিমাণরুত্তি

বর্ণহাতির * উপারি ভাগে এর মূকা দৈলে এই ইন্তিয়ে বর্তমার আছে।

भूगों करी - भाग्रेंकर, श्रीतमत, सुत्र के अस्त्र व या कराव, धरे नकत्वत मस्त्र क्षान इंडम

^{१९} शांज वर्गर् छह साम मुर्छ कला

कृषक। अधिकार्य देश स्टब्स वर्षा के बारश कार्क हैं इस्टिक नाटर ना ।

অধিকতা কোন অবৈত্ত দীৰ্থ প্ৰস্ত উচ্চ অন্তৰ্গত কৰিছে পাৰে, অন্তৰ্গতিৰ দাবা কুত্ৰ এবং বৃহৎ জানিতে পাৰে

२৫। ভারি হর্তি।

भित्रमानवित शास्त्र भेरे हिल्लिय वर्डमान पाटह ।

मूर्व किया — श्वितीत अमेर असे निज जाटह

पद्मार्ता मकन जवादक आकर्षन करते, अवर देक ने

प्रवाद दिश वा मोलि प्राह्म द्वान शतिवर्लन कानीन

प्रवाद कर प्रवाद अपि जाया करिया डाराहक

प्रवास हरेर मुनी कर्मन करते, अहे हरे विषयात

কুর্ত্তি কোন দ্রব্যের ভারিম্ব ও প্রা**তিবন্ধ** অনুমান করিতে অক্ষন হয়।

অধিকতা শিশপ যত্র সহজীয় শক্তি সকলের আশু স্বাভাবিক জ্ঞান হয়, পরিমাণের

কুলাতা বোধ হয়। নউকীর ও রজ্জুপরি নৃত্যকারির প্রিত্তক, জার যে সকল মনুষ্য বংকেপরি
বা জমোপরি নৃত্য করে তাহাদিগেরও আবশ্যক।

द्वाप्ताहीसारमञ्जूषा विचत्रव ।

্ ২৬ । র পর্যন্ত ।

ভারিত্বহৃত্তির <mark>পার্টে এই</mark> ইন্সিয় স্থিতিমান আছে।

মূলক্রিয়া বুর্গ, দাগ, ছোব, এবং তাহাদের সম্বহ্ন, এই নকল জানিতে ও পার্গ রাখিতে পারা।

ক্ষত। কলাচিৎ বর্ণ প্রধান করে, বর্ণ নিরী-কণ করিতে ও তুলা করিছে কঠিন বোধ করে।

নাৰকতা বৰ্ণ জুলা করিতে, শ্রেণী বন্ধ করি-তে, মিশ্রিক করিতে, স্থান বিশেষে রংযুক্ত করা-ইতে এবং পারণ রাখিতে স্থানুভব করে ও নৈপুণা হয়।

२। इम्बर् हे ।

- পার্থক্যর্ত্তির পার্ণে এবং প্রিমাণ্র্ভির ও ভারিত্বর্ত্তির উপরিভাগে এই ইন্দ্রির বর্ত্তমান আছে।

মূলজিয়া বিষয়ের পরস্পার সর্বন্ধ জ্ঞান, স্থানের স্থিতি স্মরণ।

শুরুতা ভূগোল বিলয় ও হান তান জপ্প হয়, স্থান স্থান বাহিতে পারে না।

ৰান মন্ত্ৰী বাৰিতে অধিক ক্ষমতা-शब हरा, वादः प्रश्ने अ जिल्लिकनक श्रव यारेल অক্রেশে পুদরাগমন করিতে পারে, ভূগোলর্ভান্ত कानिए । स्रुटमाञ्च स्वान ध्विष्ट हेन्हा करत। ্ ২৮। অন্ধর্তি।

नेश्रातंत्र विश्वादित अध्यापति जारम धरे इंक्टिश वर्षमान साटक

মুল ক্রিয়া নংখ্যার সম্বন্ধ জ্ঞাত করণ, সংখ্যা अन्म ଓ दिनाच कर्तन

मुख्छा नामना विषदा अवः जक्ष विषदा लशरू ख नात्र हीन हर, वीक गणिक विमा ख ক্ষেত্র পরিমাপক বিদায় অতাত্প নৈপুণ্য হইতে পাবে।

अधिक्की मार्गर चह भगना कतिए भारत আর অঙ্ক বিদ্যা উপার্জন করিতে ক্ষমতাপ নহর ২৯। শ্রেণীঘৃতি।

वर्गहित ७ अक्षर्ष्टित मधा स्राप्त अहे हेलिय বর্তনান আছে । মুলজিয়া ডিবের অবয়বের শ্রেণী পূর্বক

স্থাপ্র ও ভাবের জানগোঁচর করণ।

ক্ষুত্রতা কিনি ট্রা, বামনত্ব, বা অনুমানের । অভ্যত্প ধারা বা শৃত্বলাপুর্যকুত্বাপন বর্ণ।

অবিকতা ধারানুসারে ও অবিকল বাপে এবং পরিপাটীক্রমে সকল ক্রব্যকে স্বং স্থানে রাথে এবং সকলকেই হান প্রদান করে।

েত । ঘটনারতি।

পার্থকার্ত্তির উপরিভাগে কুপাল মুধ্যস্থলে এই ইন্দ্রিয় বর্তমান আছে।

মূল ক্রিয়া পূর্বে ঘটনার এবং উপস্থিত ঘটনার স্বরণার্থ জ্ঞান, যেকোন কার্য্যের সম্বন্ধ জ্ঞান হওন।

ক্ষুত্রতা দৈর্ঘটনা ভুলিয়া যায়, কোন ক্রিয়া বা ঘটনা স্মরণ রাখিতে পারে না

অধিকতা ঘটনা সকল বিশেষ ৰূপে সরণ রাখিতে পারে তিত ব্যাপার এবং ইতিহাস সঙ্গ লিত ঘটনা নিঃসন্দিধ্য কথে জ্ঞাত থাকে। প্রচুর উপাধ্যান বলিতে বিজ্ঞাহয়। সমাচার জানিতে প্রীতি জ্লেয়ে।

🍦 💛 ৩১। কালহুত্তি। 🖰

च देना इंडित ७ आन्द्र जित शार्या तुर्व हिन् छेशति

ভাগে পরিহাসপ্রবৃত্তির সমুধ্যে এই ইন্দ্রিয় বর্তমান আছে।

মুল কিয়া 'বিটনার স্থায়িত্ব অমুক্রম, এবং এককালীন ধে সকল ঘটনা ক্র্যাছে তাল তান

ক্ষত্রতা নির্বাপিত দিন ও কালের স্থানৰ ব্যথিতে হক্ষম হয়, নির্বাবিত সময়ে আসিতে বা বাহতে অক্ষমতাপদ হয়।

জান হয়, স্থান্থ কোলের গতির স্থাতাবিক জান হয়, স্থান্থ দেখিলে গতান্ত আহ্লাদ গণে তথা স্বরুতি।

পারহানপ্রস্থাতির **ও কালহাত্তির পার্থে এবং অফ**-রাভিত্র ও শ্রেণীর**ভিত্র উপরিভাগে এ**ই ইন্দ্রিয় বর্ত্ত-আন আছে।

মূলকিয়া ্রিশকের ও স্করতের সমস্ব জ্ঞাত করণ স্করের নিশন অবণত করণ।

ক্ষুদ্রতা সুস্থর যথার্থ বাপে অনুভব করিতে গারে না, নিয়মানুমারে গান করিছে বা বাদ্য করিতে পারে না, কোন উভয় স্বরের ভেদ করিতে অফ্রম। অধিকতা করিতে পারে যথার্থ সরে গান করিতে ৰূপে স্থান রাখিতে পারে যথার্থ সরে গান করিতে পারে গীত বাদ্য করিতে স্থাতাবিক ক্ষমতাপন্ন হয়

৩৩।শব্দর্ক্ত।

চক্ষুর কোটরের মধান্থিত যে অধ্যেমুখ জহি
তাহার পশ্চাতে যে বহুমান্তিধের অংশ তাহাতে
এই ইন্দিয় বর্তমান আছে।

উত্তর চক্ষু যদি হকুপর্যাত বাহির হইয়া নিমুছ। ভবে এই ইঞিরে অধিক হয়।

মূলক্রিয়া শিক্ষ বা শক্ষ প্রকাশের চিত্র ছার অর্থ বোধ করন, লিখন ছারা মনস্থ বিষয় প্রকাশ করণ।

শুনতা কোন বাজির মুখে কোন কথা শুনিয়া সরণ রাখিছে পারে না, অত্যাপ ভাষা, অন্যান হয়, বন্ত্র করিতে আশক্ষা করে। অত্য এবং সামান্য কথা ব্যবস্থা করে।

অধিকতা নাক্ষ্য ব্যবহার করিতে ও রচন। করিতে অধিক ক্ষমতা হয়, অবলীলাক্রমেক প্রতিহ্ন অনায়াসেই নানা ভাষা অভ্যাস করিতে পারে। নিশ্দনীয়তা অতিশয় রাক্য ব্যয় করণ, এবং বাচালতা।

७। अञ्चलामहिल्लास्त विवत्।।

এই সকল ইন্দ্রিয় দানা তর্ক রিছর্ক করিছে পার। যায় **আ**র ইহারা অন্যান্য ইন্দ্রিয় সকুলকে স্বীয়হ কার্য্য নির্বাহ করিছে, সক্ষম করে।

্র ৩৪।উপমাবৃত্তি।

ঘটনাবৃত্তির উপরিভাগে ও দর প্রমৃতির দশুংখ এই ইন্দির ভিতিমান আছে

स्निक्षा निर्माणि अ जारवह स्मिन्स विषय छिन्स इस छाइ। एनस नाम्था अ जारवह स्नीस्त्या न्यक कर्म क्वान्द्रशाहत कहा। जूनना एम्थन, एना अन् विस्वहना कहा है छा। नि।

কুরেভাত কোন বিষয়ে উপমা দেখাইতে প্রায় পারে না। সামানা উপমা দিছে হইলে বহু বাকা ব্যয় করে, দৃষ্টান্ত স্বায়া উপপত্তি করিতে বড় পারে না। ৰূপক কথা প্রায় ব্যবহার করে না।

ত্রিকৃত। নানা প্রকরে দৃষ্টান্ত দেখাইয়া কোন কথা বুঝাইয়া দেয়। প্রমাণ বাক্য ৰূপক করিয়া দর্শাইতে বাঞ্চালেরে। বিবিধ প্রকার সার **অञ्चर्याम** द्याध, अ **मर्**नत क्रीर्व मक्**म**रक ग्राक्षिम म

৩৫। কেব্ৰুব্ৰুক্তি। ১১

े छेशनःवृद्धित ग्रे शार्त्य अरे **रेलिय वर्डमान** चारको

कृत्वा विशेष विशेष अस्त विशेष उन्हें विश्व उन्हें विश्व असे विशेष असे विश्व असे विश्व असे विश्व विश्व असे विश्व असिक असे विश्व असे विश्

^{*} বে দক্ত ই তেও সভাগত হী ও সম্মাণোচন হক তাই দিগকৈ হভের ছারা স্পর্শ করিবার আবঞ্জকতা লাউ, দেবল দশন করিবেট ভাগ্নদেও নিয়তি স্থিক কি ক্ষান্ত বোধ হইছে। পারে।

বাছ বস্তুর স**হিত সন্মুদ্যের জ্ঞানে ক্রিরের** মিলন।

মন্ত্রের মন ও বাছ্বস্তু সকল এক কর্ত্তা হইতে উৎপন্ন হওয়াতে উত্তম ৰূপে প্রস্পরের যোগা-যোগ হইয়াছে, বিরেচনা করিলে ইহা জাভ ্ৰথা যাথ, এবং ইছা *প্ৰিক্টেভি*তৰ সভা ৰোধ ^{ভয় ।} যদি কোন পাঠক ম**হাশ**য় মনোনিবেশপুর্বক ্তান স্থাভাবিক বস্তু বিবেচনা করেন, তবে প্রথম ২বার স্থায়িত্ব, দিওীয় ইছাব আকৃতি, তৃতীয় পরিমাণ চতুর্ব ইহার ওজন, গঞ্জম স্বস্থান বা জন্য বস্তুর সহিত স্থানের সম্প্র, বঠ ইহার অং-লব সংখ্যা, লগুম অংবেশ্য ধারা বা শারীরিক নিক্পে, অ**উম্**ইছার হা**তিক্রম,** নব্য কত কালে র বাতিক্রম **জয়ে, দশম ান্য বস্তুর সহিত** সাদৃশ্য ও ভিন্নতা, একাদশ ইছার যে সকল ব্য**তিক্র**ম হ্ইতে পারে এবং যে সকল ফল দশিতে পারে। আর বদি লেই মহাশয় পূর্ব্বোক্ত বিষয় সমুদয়ের এক সংজ্ঞা প্রদান করেন, তবে এমত বোগ হইবে ণে ভাঁহার ঐ বিষয়ে বিশেষ জ্ঞান হইয়াছে এবং ্ডিনি অন্যৱেও বুঝাইতে পারেন। 🐪

উপরি উক্ত ধারাকুলারে দর্শনশাত্তেরও শিক্ষা श्रमान कतिरु इहरत्। अर्पनरकत छेखिषिमा। अ ধাতু নিৰপূণ বিদ্যা শিক্ষা করিবার ইথেট স্বাভা-विक दुक्ति शांकिरने औँ देशे ठा हा विकास अमर्थ **द्रिम् के नर्के ७ वि**षयानी तुझन **छ्वान इ**स्र, कात्र । व्यटन-কের এমত অক অম আছে যে এ উভয় বিদ্যা বিষয়কু নানা ক্রের নাম ও **তাহার জে**ণী বিভাগ জানাই তাহার প্রধান তাৎপর্য্য, কিল্ল ছাত্রদিগকে তাঁচাদিগের স্বীয়ং মনঃ ইক্রিয় সকল জ্ঞাত করা-हेला जित्र दां वर्ष वर्ष वर्ष के हे जिल भकरनत নির্দিট সম্বন্ধের পরীক্ষা দেখাইলে, তাঁছারা এবি-ষয়ে **নিত**ংও আনন্দ পূর্ব্বক চিতা করিবেন, **স্নতরা**ই অক্লেশে শিক্ষা হ্ইবে। কোন বস্তুর জ্ঞান করিছে हरेटन अथम जाहात हात्रिक मटनाटगान हत्र, পশ্চাৎ পার্থকার্ত্তি ঐবুস্তকে তাহার আপন শ্রেণীস্থ করে, আকৃতিহৃত্তি **তাহা**র আকৃতি জ্ঞা**ন করা**য়, এবং বর্ণরুদ্ধি ভাহার বর্ণ বোধ করায়। এই রূপে जमाना खेन नर्कटलत नश्क निर्मिष्ठे रहा। निक्क প্রথম ছাত্রদিগকে এই প্রকার শিক্ষা দিয়া প্রকার वञ्च नकरलंद नाम, त्थानी, दर्न, अ आर्थि निका

৫৮ মনতত্ব সারসংগ্রহ। कताहरवन, किनना जन्दाता जाहारमत किवन छन ও পরস্পার **সমন্ত্র জানাইতে প্যারিবেন। এ**ই প্রকার শিক্ষা করাই**লে ইহার সকল** উপকার দশিবে। যে ব্যক্তি পূর্বেষ যে আকুতি দেখিয়া ভারার অভি-শः । (शोन्हर्गा यो **व्यक्तोन्हर्ग्य कि**ष्टू शे विद्यवन। कदः मार्चे अपर वाकिन्दे यांने शृह्यवाक **উপদেশ भार क**दव পবিলয়ে সেই আফুতির তারতমা বুঝিরা কাফা-भिः वरेत अन्य **होलना भात** है **जनामा है क्तिरात** কল পদু ধারল করিবে। **যে ইন্দ্রিয় যত অধিক রহ**ৎ হয় জন্মিয়ক শিক্ষাতেই তত অধিক আমন্দ হয়-किंगु 🧺 न बेलिय जान मधाम अकात उन्न ₹-লেও াবেট শিক্ষা হঠতে পারে, অতথব জ্ঞানে िन्द्राप्त अहेकथ ठानना छना विमानिद्य गेमना-भगदरहरहरा भारतक्षिणा नाहे। स नकत शाजा-বিক ও কৃতিত ন্তুতে আমাদিগের মন **শকির** পর্ত্তি জন্মে তাহা খন্তেমণ করিলে সকল স্থানে প্রচুর দেখিতে পাওয়া বাদ এবং যদ্যপি পাঠক मराभिम यथन (मर्भ दा नश्रद्ध ग्रम्भाशमन করেন, তৎকালে পূর্ব্ব কথিতামুসারে তাঁহার নানা প্রকার মনঃ শক্তি সতর্কতা ক্পে নিযুক্ত করিলে অগণনীয় আনন্দের স্থা দেখিতে পাইবেন অথচ ভিনি তথনও ভাহাদের ঘথার্থ নাম ও ভোগী জানিতে পারেন নাই

তৃতীর খণ্ড।

ুমনঃ শক্তি সকলের ক্রিয়ার ধারা। 📜 ननः मुक्ति मुक्त श्रीयर किया निक्तार केत्रिया থাকে এবং উপযুক্ত ৰূপে ক্ৰিয়া ব্যন্ ছ্ট্ৰে টুক্তম-्डिं**टिक, या जावश्चक किया मकन डे**र्शिंख कात्र। प छा**छ प्रिक अ**वन इरेशा कूश्रामा इरेटन निक नीर रह किर कान रेक्सिय कुछ स्ट्रेल डाहात अक्ति निक्तित नरह, रंगमन प्रशाशका कि क्यू हरेटन - छुत कर्मा मिक इस ना वतः अदनात क्रःरथ তি । স্থা ইয়, এবং কর্ত্তব্যু কর্মে ক্রটি হইয়। থাকে, चात्र य**थन जुरू हे** स्मिन्न के कूप रूप ठथन **छ। रहिर्ह** অপর প্রবল ইন্দিয়ের বাধা জনিছে গারে না, अञ्जार तन्दे अनम रेजिय रहेट निमान कार्या উৎপর इरेट भारत, रामन उपाक्त नथतृष्टि ७ भित्रभवेश वाधिक धवर हिडाहिड विदेव हमा-थिवृं डि ७ प्रस्मान युष्प, भरे मकने अकळ मररयान হুইলে চৌর্যা বৃত্তিতে রত কারতে পারে । বিপ্রদ-ज्ञानश्रविष्ठ ७ नामक्षवृद्धि अधिक क्रियतान् प्रवश रेहादनत महिक पर्याधात् कि कुले हेहेटन मिछ त কার্যা ও কলছ উৎপত্তি করিতে পারে।

ं अर्छाक रेलिय दिनि कातरन चर्चा विरुद्धे हैरन वित्नय अकात देवाप छेरशांख करेत, रेहा छ। हाइतित त्राजीविकावका इरेड छर्पन रहा, वर विवस ষিতীয় খণ্ডে বৰ্ণিত হইয়াছে। বৃহৎ ইন্দিন সকল व्यथिक अवर मूज रेखित मकन व्यथ्य श्रीत कार्ना করিতে বত হয়। এতোক ইন্দ্রিয়ের স্বীয়হ ক্রিয়া নিব্বীহ'কবিবার ক্রমতা আছে কিন্তু কেইই সীম। অতিক্রম ক্রিভে পারে না, ইস্থা প্রকাশ্র দেখিতে পা ওয়া যাইতেতে এবং ইছাদের মধ্যে কেছ त्रजावकः भन्म नदर, काद्रः। जार्श स्टेटन जागा-निगरक भाभ करमा अवृत्व कतिवात बनारे अि কর্ত্তা আমাদিলের ইন্দিয় সকল সৃষ্টি করিয়াছেন এমত বলিতে হয়। 🖰

ইচ্ছাইন্দ্রির ও চিন্তাইন্দ্রিনিকে কেবল বাঞ্চার বারা অবিলয়ে ক্রিয়াবান করা যায় না বেদন আমরা ভয় জন্য, দরা জন্য, ও ভক্তি ক্রা মনোবিকারকে অপ্রকাশিত রাখিবার বাঞ্চা হইলে তদন্ত্রপ করিতে পারি না। এই উত্র ইক্রিয়ের শক্তি ইন্দ্রির উল্লেজিত হইলেই অবার্ধা বিত হয়, এবং প্রচোধে যে ইক্রা বা মনকাশ

मेनीरिया देनस्, जारा जामानिदेशत कानिवात रेफ्टा र्डेक् व ना रहेक् अवश्रद्ध छाड रहेको समन কুত মন্তিক অর্থাৎ রতিপ্রবৃত্তির ইত্তিয় আন্তরিক कात्र बाता मदत रहेल श्रीय त्यार ज्याहेमा (मत् **जनः जरे हेन्सिए छरांडाबिक हो हो ल**े द्यारमञ् वाथा मिट्ड शीता याग्र मा । आमामिट्रात अमर्ड कमठा आदं रकाता है हात कि बादक कार्या होता अकाम किरिए या प्रमा किरिए भाति, किछ धाई ইন্দ্রির উত্তেজিত হইলে পর, ইহার বোধকে অ।মরা ইচ্ছাস্ট অনুভৰ করিতে বানা করিতে পারি না। সতর্কভাপরতি । প্রজ্ঞাশাপর্তি, ভক্তি-**४ दुखि : ७व॰ : श्रेमाना हे सित नकत्वंद : ७वन्छ-**বার অবস্থা হইয়া থাকে ৷ ক্যেন্থ সমূরে আমা-দিনের অপর্যাপ্ত আশা কা আশকা অকরেতে উলয় হয়, যাহা বাছ কারণ দারা উৎপদ্ধ ইইয়াছে এমত আমর। নির্দিট করিতে পারি নার এই প্রকার বোৰ স্কল পূর্কোক্ত চিন্তাইক্রিয় সকলের আপন किया हरेरक हे छेरशम हम्न, धवर वाथ हम्न के ং ক্রিয় সকলের স্থীয়**ং স্থানে রক্তু অ**ধিক গ্**মনা**ং भगन हरेटल रे कं नकल किनात उनग्र स्टेटल शास्त्र।

विञ्जा अरे नक्न रेक्निय आमापित्यत रेक्न वाकित्तरक अवस्थित पर्नेटन र उद्विकित रहेशा भारक, वर्शक रेंच वाश वड मर्नाटन रच हे किया फेरक बिठ हरेट शास्त्र देन देख (मशिस्तरे **डा** हाई किता अधिकान इस्। किन् हुःथकनक विषय **प्रिंति मशोश्रहिक किशोबीन् इ**शं ७वर हेशत विटम्ब स्वाक नकते छेरशिक करते, विश्वनकनक বিষয় দেৰিকো সতৰ্কতাপ্ৰবৃত্তি অবিলয়েই বিপদা-শক্ষা বৌধ করাইয়া দেয়, তবং প্রেমাকর্ষক বিষয় উল্লেখ্ড स्टेरन সৌন্দ্র্যাপ্রবৃত্তি উদ্বর সৌন্দর্যোর বোধ সনে নিবেশিক করে। এই সমস্ বিখয়ে কার্যা করিবার ক্ষমতা বা অক্ষমতা আমাদিনের ইচ্ছাতেই নির্ভর করে, কিন্তু বোধ করিবার ক্ষমতঃ वा अक्रमण अर्जामुन नंदर । भन्नीतावन्ता अन्त হইলে আন্তরিক ও বাছ কারণ দারা ইন্দ্রিয়ের যাদৃশ ক্রিয়া হয় শরীরের উৎকৃষ্ট অবস্থায় তদ-ालका **अ**धिक छेख**म हहेत्छ ला**द्धाः

ज्जीत्र ए मकल रेक्टिस्त्र विषय अक्राध्य किर्ण किराजी रेक्टा किराज जारानि गटक न्या के किराजी किराजी

नाति, बेदालि नक्न दिधिनदेखिः रेक्।रेखिदाव ७ विडाहेक्टिया या अधिक निक्शिक छेटडमना त्वाओं जया अर्थेटइ**एड**िलिश्वरङ नियुक्त इतः छट्ट लिट्याक है जित्रात्री भूक्त किथिक अव दित कार्या कति-তে প্রয়ন্ত হইবে, কিছু তত উগ্রভার সহিত নহে বত ভাহ।দের বাছান্তিত নিরাশিত বস্ত দর্শনে হইতে भीतः बहेबन वरशिट रेड्डिसिस्त्र ७ हिटा-ইন্দ্রিয়ের শক্তি এবং আহরিক দর্শনের শক্তি अञ्चलादा वाद्यत उद्यान हत्र, व्यमन विक दृःथा-विषय अन्यदित्व अनुवान कतित्व भवर एक्री-अहि छ व**न भौति**रन करूना द्वाध रहेता करनर নয়ন নীরেভাসিত হইবে। ষদ্যশি আমরা কবিতা-मिक दा भिम्पर्याश्वरं किया प्रमन केंद्रिए हेला कात ज्राय जागता तकर्तन हेला कतिशा अह विद्यारेतिक एक विद्यामी कतिए शांति मा किन् रमात्रा छिछ्छात्र्डि, मठक्ठाधत्र्डि, धामोगत-প্রবৃত্তি, বা দ্যাপ্রবৃত্তি উত্তেজিত হর, এমত বিষয় भागत। भन्नत किताल ये गवल हे जिस्ह , फेट दिल के इरेटवें , के दें कि विशासिक वा सीनाया-প্রীরভিকে ক্রিয়া রহিত কবিবে।

γ गमानि कान रेष्ट्। रेम्प्रिया विखारे **स्थित जन**त्र কারণে অভ্যন্ত, কিয়াবান্ হয় ভিন্তে জ্ঞানে প্রিয়া भक्तर क देशाव मसकीय विद्**गवर रह मक्त्र अंखुद्र**् দর্শন করিতে এত গরিবে বেমন সত্তর্কতাপ্রয়ন্ত্রি অধিক কিয়াবান্ ইইবে ভ্রানক বিষয় অভ্রে লক্ষা করিয়া, আন্তৰিক চিন্তা সঞ্জলকে চা**লন্** করিবেক এয়াপ্রার্জি ক্রিয়ার। দৃষ্ট্লে ওপ্রাটে ার উপায়ুক্তরিতে বনং নিবিউ শারিক, ভাজিপ্রাক্তি অধিক উত্তেজিত হ্টলেমান্তে। বিষ্ত্তে লন-নিযুক্ত र्नेत्न, উপार्क्षमध्रवि अल्ल ह**रेत्**न (वेस्ता स मक्ष्य रुवितात अभादस्य मनवित्र । किवित्र मङ्गिवा को लोगाथवृत्ति मक्दत्यक 💎 🗵 🔻 फे **অপূর্ত্ত করে ও বিষয় স**কল 🦠 করি**বে যাহা** কু**খন ক**াহার নয়স গোচর হয় মার্

रेकारेकिस ७ हिनारेकिता त्रान व्यक्तात असूगान कल्लानांत काम्छा ना बाकाट्ट महारान्ति मिर्गत (ब मक्ल त्राप ७ सम्खाल छेवलि कृति-बात कामछा बाट्ड कारा त्यकाट्ड व्यक्तिम बेट्ड-किछ दा शूमताहुङ कृतिहा बनाय हरेनाटक अरे मक्ल रेक्टियात बेम्ड छन् नार्ट (स क्राह्म)

बाहित्त्र ता प्रख्रात स्मिथिएक, यात्रम द्राधिएक, या কিম্পনা **ক**রিতে পারে। ভাহাদের কেবল ইচ্ছা ও মনত্রাপ করিবার ক্ষমতা আছে, অর্থাৎ মংকালে ভাহরা বেশ্বাহিত হয় তংকালে এক প্রকার हेक्। ७ मनदाश चतुष्ट्य करता

नित्र भित्र ७ जमाना वाश्रहेलिएशत भित्र त षांती (स. रिवाध करम कोश्तरक "व शरिक्षमा" वक्ता ৰায় কিন্ত ইহা কোন ইন্দ্ৰির নহে 🗸 🎺

কেইং বলেন যে তাঁহারা হেল্ডাতে মনভাপ বকল পুনরাহ্বান করিতে গারেন, কিন্তু ঐ সকল ব্যক্তির অনুকরণএরতি ও গোপনপ্রতি অধিক আছে এবং শরীরাবন্ধাও উত্তম, তাজনা এইৰূপ ললিতে ক্ষমতাপন্ত্ৰ বোধ হয় **তাঁহারা মন**-अपन मध्यीय । अ नकल अथरम मरम अनुसावन করেন তৎপরে ঘনস্তাপ উৎপদ্ হয়, কিন্তু ইহাকে অবিলয়ে আহ্বান করা বলিতে পারা যায় না। :

বোধন ও অনুসামেনিন্ত্রিয় সকলের ধারা এমত নহে ইহারা অমুসান কপেনা করে সহন্ধবোধ করে, ইচ্ছা প্রকাশ করে, এবং যে সকল অন্যইন্দ্রিয় কেব-ल (वाधक्म जारातम्ब अट्डास्टर्थ नाराया करत्। "रेक्।" क्वार्ति सिंद्र के दिश्व विरम्पर था । इनेएक उर्थन रह किछ ने भारा के जाना वा विद्युष्टना करा कुला रहा किछ ने भारा के जाना वा विद्युष्टना करा कुला राह ना । क्वार्ति विद्युष्टना वा विद्युष्टना करा कुला रहे । कुला रहे हा जिल हो कि हो अपना करा जा हो । कुला रेक्टि सिंद्र के कुला हो । किया विद्युष्ट के किया है कि

প্রথমতঃ জানেন্দ্রি গ্রন্থর কারণ দারা
ক্রিয়াবনি হইলে যে দকল লমুনান ক্রেণনা যোগা
তাহারা অলেশে মনে উদর হয়, যেমন গায়কের
মনে নানা প্রকার অনাহৃত স্বর উদয় হইভেছে,
গাঁহার অন্তর্গু অধিক বলবান্ও ক্রিয়াবান তিনি
বাভাবিক ক্ষমতা দারা সংখ্যা গণনা করেন, খাঁহার
আক্রিপ্তি বলবান্ তিনি সহজে গঠন বোধ করিন
তে পারেন, খাঁহার হেতুবৃত্তি বলবান্ও ক্রিয়া

वान् जिनि अनुमान काटन दिना পরিশ্রমে उर्क करतन, এবং गाँ हात পরি हामश्रद्ध वलवान् अ किन्नान इस ठाँ हात मरन द रखन क वाध नकल अगठ अगरत अ अगठ खारन आविकल जिन्हा हरेर हारक रवें नगरत वा य खारन जिनि जाहा-एवं क्रिक्ट इश्रद्भावा करतन ना।

बिडीइड का निक्य आश्नेर छेशयूक वाक् बाउत छेश कि बाता कि सावान इटेंट्ड शादत, वर्षा ६ ति मकल बाक्य वखत अहै मकल टेक्सिएक कि साः बान् कतिवात क्रमेडा चाट्ड, का दाताठे छेशाति छट्डका। करिंट्ड ममर्थ इस।

্তৃতীয়তঃ জ্ঞানেক্সিয় স্বেচ্ছাক্রেই ক্রিয়াবান্ ইইতে পারে।

कारमान्य मकल वाश वख्र द्वाता छेश्मोशिहिछ इस्ट्रेड्डियम मकल ज्ञानर्गाणत स्म धवर स्थारक "প্রভাক" वला याम । वाशसेन्द्रियत य मकल मिता चारह छाशायसे श्रम्भात वाभरमात करमा श्रम्भार के भिता पान के मश्चात वाभरमान छ प्रस् मोहनकिरस नीड स्म उद्दर्शत श्री कर्म से सिन द्वाम वप्र छेळ ना स्स्रोध निम्म नर्म

বোধ করাইতে পারে, এবং প্রত্যেক ইন্দ্রিয়, স্বীর সম্বন্ধীয় বস্তু বেগৰ করে। কোন বি**বন্ন দর্শনীয়ে** বা অবণাতে ঘাঁহার নেনে প্রকার অ**মুভর দা**িহয়, তিনি কোন বিশেষ ইন্দ্রিয়ের শক্তি প্রকাশ করিতে जनक २२, विभग बार्गवाजिनी जानायन कविरेन যিনি তাহাদের শ্বর মিলন বোধ করিতে অপারক তিনি স্বরবৃত্তির শক্তি প্রকাশ করিতে পারেন নাঃ माञ्जालातुनारव अवर छक विकटन के म जिसर कतिया राज कंतिरन विभि छो शास्त्र शतंत्र्यतं मसक् ও সিঁদ্ধান্ত বুঝিতে পারেন না ভিনি হেতুবৃতির मकि खकान किट**ंड** अभारति इन, धर ६ रेड्स ्षमाना रेक्टियत विवेदत श्रीमदन्ते। जन्नमा व সকল ইন্দিয় বিষ্টাের পাকার বেংগ করে ভাছা-मिटनंत्र कान ना ज्यान अकेंग्ने किया इ**रेटेंड** को त्वाभ जत्य जाहात्क देशकाक" देशानात्र दिखे रेश देशन रेक्टिये मर्था श्रेश नर्द

रेखियं नकत्मद्र आधार्यक जिल्लामा हरेटन प्रक त्तर्टर काम विषय तीर्ष हर्श धर्वर के ब्रिकेट क "भागतिर्ध" बना गाय । यहाशि अध्योध अवस् हर् जिल्ला रहारक "अञ्चल' तेना गाय । स्थम श्रीका

या अना (कान कातरन रागन हेक्स्रित छेटछका হয় তথ্য অনুপস্থিত বাহ্য বস্তু সকল আন্দোলিত হইতে থাকে তাহাতে ৰোধ হয় যেন দেই বস্তু সকল সমাৰে ভিতিমান্ আছে এবং তাহাতেই <mark>,রপ্ন বা ভ্রমাত্মক দর্শন হয়। আশ্চর্য্যপ্র</mark>বৃত্তির हेन्निय अधिक वा विकल हहेला आग्नहे अहेना कल छेर्पिन्ति **इहेशा था**कि । या नकल विषद्धत कण्णना नर्वना मत्न छेन्द्र रहा, ठाराहा हेस्स्या-দির **অন্তরস্থ ক্রি**য়া হ্**ইতে প্রকাশ হয়, কিন্ত** বিংশদ**ং কম্পনা সক্ষলে**র যোগা**যোগ দ্বা**র। উৎ-পरिव २ श्र ना। ई **लिश्न नकन** श्रवन ७' किसावान् कर्राम कम्भना नकन कमा नीख उपयुक्त, এवर को। ও अकर्मग्र हरेटन बीत्रकाव एवं। शडीत निका का**रक** हे लिये "अकल मण्णूर्नकर्टम 'विध्वास থাকারে ইহারাও সর্ক্তোভাবে স্থাত হয়। जिमिर्ड ज्युद्रीप ७ जञ्च जरक महनत विरमवर मुक्ति वैलिया वर्ग कर्ता बाब हा, किस हैश र्थर्डीक के क्यामान हे लिय रहेटच छेरशम रय। - জানেন্দ্রির কোন কারণ বশতঃ উদ্বেশিত হইলে পূর্ব্ব কম্পিত বিষয় সকল মনে উপস্থিত করে, আড-

এব এই ক্রিয়াঁকে "মরণ" বলা বায় এবং প্রত্যেক জ্ঞানেক্সিয়ের ক্রিয়া হইতে উৎপত্তি হয়, কিন্তু ইহাকে মনের কোন প্রধান শক্তি বলিয়া গণ্য করা যায় না। স্বরহৃতি স্কুখর স্মরণ রাখে এবং পার্থকার্তি বর্তমান বস্তু স্মরণ রাখে।

কার্য্য কারণ ভাবের পর পর সর সমস্ত্র ও যোগাড়া বোধ করাকেই "ইভর বিশেন বিবেচনা" বলা মার এবং ইহা কেবল অনুমানই জিয় হই তে উৎপন্ন হয় এই সকল ই জিয়ের প্রত্যক্ষ, স্মরণ, এবং সমুভব করিবার ক্ষমতা আহে । গাঁহার এই সকল ই জিয়া বলবান, তিনি অনায়ালে প্রত্যক্ষ, অন্ত বোধ, স্মরণ, ও অনুমান করিতে পারেন ।

মনের স্বীয় স্থায়িত্ব এবং স্বীর কার্যা ভ্রানকে শ্রানকিক তৈতন্য" বলাবায়, ইহা দ্বারা ইন্দ্রির সকলের
স্থায়িত্ব বোধ জন্মেনা,কেবল আমাদিগের আপন্ন
মনের কার্য্য ভ্রাপন করে, কিন্তু অন্যের মনের
ভাব মে অংশে আমাদিগের সহিত ভিন্ন ভাহার
কিছু মার জানায় না, এবং কোন্ ইন্দ্রির হুইতে
মানসিক তৈতন্য উৎপন্ন হয় তাহা আমরা জানিতে
পারি না । একারণ মর্ক্স জাতীয় মনুষ্যকে আয়-

বং বোধ করিবাদ কা**হ'ব কি ৰূপ স্বভাব** ইহ' নিৰ্ণয় ক**রিভে'হইলে নিতান্ত ভ্ৰম ক্ষে**ঞ

প্রত্যেক ইল্রিয়ই বোর ও কম্পনার মান্ত্রিক টেডনা জ্ঞাপন করিয়া থাকে, নেনদ স্বর্তি অত্যম্প হইলে স্বস্থরের মনানিক টেডনা উপার্জন করিছে গারে দা, হিডাহি হবিবেচনা বৃত্তি অত্যপ হইলে পর্যা জানের মান্ত্রিক টেডনা হয় না, এবং ভিজিপ্রবৃত্তি অত্যম্প হইলে ওয়া জানের প্রতি সম্মানের মান্ত্রিক টেডনা হয় না।

"मार्गिरवाना" हेल्लिश मारण श्राम्म मारण, विख वीमार्गिलिश ७ अधूमार्गिल्लिश वीस विषय निष्णारनीत श्राम ने गर्गारवानी समस वित्रवृद्धि नाम अवरण प्रेरमाण स्रोटल प्रत्यत स्वमारकार मार्गा स्वानी स्ति स्कृत्छि काम विवस मीमारमा कत्रत्य स्थाना विवस कतिर्ह्ण मार्गि स्था अवर अहे स्वकारत स्नार्गिल्लिश मार्गा माजि मारल छारा-रिन्य मार्गा विश्वस गर्गारमाधी स्था

"অনুবান" কোন ইচ্ছা বা চিন্তা ইন্তিয়ে অধিক ক্রিয়াবান চইলে উৎপন্ন হয় এবং বড় প্রকার ইন্তিয় সাড়ে অনুৱাগও তত প্রকার আছে, যথা

ধনাবাদানুরাগ আঅবশংপ্রবৃত্তি অভাত সম্বর ও कि सर्विन् इहेरल উৎপन्न इस, बद्धर्थना सुतान छेथा-र्জनथ्यवृद्धि रूदेए७ উৎপन्न रेग्न। क्लानित्तन नकन এত ক্ষুদ্র যে তাহাদের এমত গ্রিক ক্রিয়া হইতে পারে না যাহাকে আমর। অনুরাগ বলিতে গারি। বাদ্যের অনুরাগ ও জ্ঞানশাত্রের অনুরাগ, এইৰূপ वाका आमता वावशांत्र कतिया थाकि वटि किछ এই প্রকার বিষয়ে কতকগুলিন ইচ্ছাইক্রিয় বা চি**ন্তাইন্দিয় স্থর**বৃত্তি 'ও হেতুবৃত্তি ভারা_্মতান্ত উত্তেজিত হইয়া জানেনিয়ে সকলের সহিত্সংলয় र्श्न, भूतः रेशारे अरे अनुतारगत भूग । छ। रमिन-য়ের ক্রিয়া ছইতে কেবল এক একার অন্তরাগ বিহীন মনের অবস্থা মাত্র উংপন্ন হয়ন স্তরাং এমত কিছুই হইতে পারে না বাহাকে কাম্প-निक अनुतान रेना यात्र, ज्यानि विहेनने अनु-রাগ অনেক গ্রন্থে দেখিতে পাওয়া যায় 📜 শস্তু-ধোরা স্বীয় স্বভাব পরি**বর্ত্তর করিতে পারে না** এবং তাঁহাদের যে সকল বাঁঞা হইয়া থাকে ভাহা অবশ্যই কোন স্বাভাবিক মনঃ শক্তির সন্থোথার্থে উৎপন্ন হয়। 👍

"স্থ ও ছুঃখ"। বাছটেচতন্যের শিরা বিরক্ত र्हेटन भंतीदत्र क्रिंग উৎপত্তি ह्रंत एवर उनसूराति বোধকে শরীরের স্থখ বলা নার। এই সকল বোধ मेखिएकत महिত भः नश हरेल ख्रूश वा प्रूव्य वाश्र হয়। মনের স্থ্বা ছঃখকে মনের এক প্রকার ভাব वला यात्र अर्थाः यहकानीन मनः य जारत थारक ভদমুষায়ি বোধজ্ঞ করে, এবং ইহারা প্রত্যেক ইত্রিয়ের চালনা হইতে উৎপন্ন হয় ৷ প্রত্যেক মনঃ শক্তি প্রাপন ইচ্ছারুয়ায়ি ক্রিয়াতে উত্তেজনা -পাইলৈ স্থথ বোধ হয়, এবা বিপরীত হুইলে চুঃখ 'বোধ হয়, স্থতরাং' যত অধিক মনের শক্তি আছে ভত অধিক মনের **স্থাও ছ**ংথ হয়_া্ডিরিমিজে ধাঁ ছার দয়াপ্রবৃত্তি অধিক তিনি মহা**সা স্বলে অচ**নার त्नाम क्रमा कतिएक जानम द्वाप करतेन, याहात নাশক্প্রবৃত্তি ও আত্মাদরপ্রবৃত্তি অধিক তিনি প্রতি হিংসা করিতে স্থথ বোধ করেন, বাহার উপার্জন-প্রবৃত্তি অধিক ভিনি অর্থ অধিকার করিয়া রাখিতে ফুখী হন, এবং বাঁহার ভক্তিপ্রবৃত্তি ও হিডাহিত-रिट्रिक नाथ्यवृत्ति , व्यक्ति पिकि समुद्रमात विश्वाच-लायात्क त्रकान कतिर्द्ध भानमिन्न रन । वर्

বাপে সুখ ও জুংখ বাছটেচতনার শিরা ও মনঃ-ইন্রিরের ফলোদ্য হইতে উৎপন্ন হয়, কিন্তু ইহারা স্বরং জন্মে না।

শ্বৈষ্যাবৈষ্য'। বৈষ্য নিশ্চিত বোষের ন্যায়,
এবং ইহাকে দ্যাপ্রবৃত্তি, ভক্তিপ্রবৃত্তি, প্রভাগানা
প্রবৃত্তি, হিতাহিতবিবেচনাপ্রবৃত্তি, এবং দৃঢ়তাপ্রবৃত্তি, অপ আয়াদরপ্রবৃত্তির সহিত একত হইয়া, উৎপন্ন করে। অগবিতা, বিনয় হিরতা ও
বশীভূততা এই সমস্ত পুর্বোক্ত অনেক সংযোগের সহগামী হয়, এবং এই সকল হইতে
বৈষ্য ও সহতা উৎপন্ন হয়। শ্রীরাবস্থা অতিশ্র
বার্থিত অর্থাৎ স্থূলাকার হইলে কিন্তা মতিমের
অপতা হইলে চেতনা রাহিত্য হইতে পারে
কিন্তু ঘাঁহারা নরের সভাব জ্ঞাত নহেন তাঁহারা
এই অবস্থাকে বৈষ্যা বলিয়া থাকেন।

যাহার শরীরাবছা উত্তম ও সৃষ্থ এবং দর্মী প্রবৃত্তি, ভক্তিপ্রবৃত্তি, এবং হিতাহিতবিবেচনাপ্রবৃত্তি অপেকা আত্মাদরপ্রবৃত্তি, বিপদভঞ্জনপ্রবৃত্তি ও নাশকপ্রবৃত্তি অবিক, তিনি বিপক্ষতা ও বাক্য নয়করণে অধৈষ্য হইবেন। যাঁহার স্বরুত্তি कालगृष्टि, धदः कविष्ठाणि वा मोणशाक्षश्चित्र विकार विकार के निकार के निकार

"आनम ७ निजानमः"। প্রত্যেক ইড়াইন্সিয়
श्रीয় বিশয় প্রাপ্ত হইতে চেফা করে এবং প্রাপ্ত
হইলে মনে এক প্রকার সন্তোবের উদয় হয়, থবা
উপার্জনপ্ররুতি ধনাতিলাম করে, পার্পবঃশপ্রতুতি
প্রশংসাও প্রতেদ আকাক্ষা করে, এবং আআদরপ্রত্তি প্রভুত্ব বা সাধীনতা বাঞ্চা করে। ধনোপার্জন হইলে উপার্জনপ্রবৃত্তির সন্তোব ইয়, ইয়।
দারা এক প্রকার সন্তোবজনক বোধ জনে মাহাকে
আনন্দ বলা যায়। ধনচাত ইইলে উপার্জনপ্রতু
তির সম্পত্তি হরণ ইয়, এবং পশ্চাই ইইলি ভারা
এক প্রকার সংখ্যায়ক বোধ জন্মে, যাইকি নিয়া-

नन्म देना यात । এই প্রকার আত্মযশংপ্রবৃত্তি,
আত্মাদরপ্রবৃত্তি ও শিশুপ্রবৃত্তির দৃষ্টান্ত দেখাইতে
পারা ঘার । এক মনোহর সন্তান ভূমিত হইলে
পিতা মাতার সন্তান বাসনার ন্যুনাধিক্যানুসারে
স্থা বোধ হয়, অর্থাৎ তাঁহাদের শিশুপ্রবৃত্তির
প্রবলতানুসারে আনন্দের উদয় হয়, যদি তাঁহাদের
দের ঐ সন্তান নই হয় তবে ঐ প্রবৃত্তি সীয়
সম্পত্তি হয়ত হইয়া বিদীর্গ হওয়াতে তাহাদের
উক্ত প্রবৃত্তির আতিশ্যানুসারে শোক বা নিরাদ্

"বভাব" অর্থাৎ মনের কোন বিশ্বে ক্রিয়ার থারা চালনা দারা প্রবল হইয়া স্বাভাবিক বাঞার ফল হইতে উৎপন্ন হয়। ইন্দ্রিয়া উচিত নতে ব্যব্দুত হইয়া স্বাভাবিক ক্রিয়া নির্মাহ করিলে ক্রিয়াবান্ ও অধিক নিপুণ হয়, যেমন বাদ্যকার কের অন্থলী সকলবাদ্যানুষ্ঠান দারা মুরা ও নিপুণ গতির হৃদ্ধি করে। কোন ব্যক্তির অন্থলি অধিক আক্রিয়া মুখেই অন্ধ্র গণনা করিবার বাসনা হইকে অতি শীঘ্র ভাহাতে নৈপুণ্য হইতে পারে, ইহাকে স্বভাব বলা যায়। এবং বিপদভঞ্জনপ্রবৃত্তি, রাশক-

व्यवृष्टि, ও आधामत्रव्यवृष्टि अधिक शाकिता विवास ও नः शारम मञ्जूषा तक हरेटल विद्यापि अखान रह्म

"गृहमा" मेखिएकत उक्कमानका इटेरङ बनः ইন্তির সকলের মধ্যম ৰূপ ক্রিয়া হইতে উৎপন্ন হর, বেমন যে পদা অনৌচিত্য, নিয়মাতিক্রম, युक्ति विक्रक्षकी, वा अन्यक्तप्रका विहीन इन्द्रा अहर চিন্তাই জ্বির ও জ্বানে জিয় সকলকে সভোষ প্রদার করে তাহাকে অতি সুক্রর পদ্য বলা যায়। ক্রিছাস্তি বা সৌন্দ্র্যগ্রন্ত অভ্যন্ত অধিক থাকিলে বড় কথা মাবহার করে, হেনুহুত্তি অতি अवन वाकिता जन्मके अक्ठांत अदिम क्रांत्र, लितिहानश्रहि अडांड अधिक धाकिता कण्णना, ীরসম্বটিত হস্ব কবিছা, ও অভসত। করিছে প্রায়ুত্ত हम । अक थानि हरी विक छानरे छिता । धर्म প্রবৃদ্ধি 🖈 স্কলের সভোষজনক হয় ভবে ইহাকে টুত্ৰ পছক বোগা বলা যায়। এইৰূপ বৰ্ণবৃতি त्रविता व इक्रम बार्श कियावान इरेटन के हरी

^{#18} नामा पृष्टि कहन।

ब्राइव बना जान मन्द्र शहन्त क्हेरव, धवर आकृष्टि वृक्षि की। रहेटल कुर्शक्षेत्र द्वाप रहेदव, दनोम्बर्धाः প্রবৃত্তি ও বর্ণবৃত্তি যদি অনুমানই ক্রিয়াদি অপেক্ষা ष्यिक व्यवन रुप्त, जत्त के ह्वी हमश्कात ও वर्ता-জ্ঞা বোধ হইতে পারে কিন্তু শৌরব ও ভাব विद्यान द्वाप इट्रेंग। मास्त्वृति चिक अतल इट्रेंग विक्थवधा वा**ष्ट्रणा ७ वा**ष्ट्राणका एस, अवर **पश्चि** की रहेटन वाक् अवक नीतम्, कठिन, अ मीठ हरे जि भारत । घष्टेमातृष्टि ऋषि अदल हरे ति असू-भाग ना कक्षिमारे क्लान विषय वाक्त कहत। अनु-मानरेखित अठि धारत ररेत गरभरी द्वास का **প্রমাণ না** পাইয়া তর্জনিতর্ক করেন। জীব**প্রবৃত্তি** * প্রেবল হইলে অধম ও পামর হয়, এবং কোন্ড াব্যক্তির চিন্তাইন্দ্রিয় তীক্ষু ও গভীর হুইলেও যদি: ্জ্ঞানেন্দ্ৰিয় তদপেকা অধিক প্ৰবল হয় তৰে সে ৰীরসূত অমনোরঞ্জন হইবে। 🦠

काम, त्काध, त्वाङ, मन, माएमर्श, अवर त्याहर अहे इत्र तिशू कान अक विराम मनःहे जिस इहेर्ड

३८ भएज मृष्टि कक्रम १

মনতত্ব বিদ্যার ব্যবহার্যতা।

এই বিনার পূর্ব কথিত বীজের মধ্যে উক্ত হইরাছে, যে পরিমাণানুসারে শক্তির সীমা জানা যায়, কিন্তু মন্তিক মনের উৎসাহানুসারে গঠন পরিবর্ত করিতে পারে, তমিমিছে প্রথমে প্রায় সমুদায় মন্তিকের পরিমাণ, এমত, কপে ভিয়হ করিয়াজানা উচিত যে সামানা শক্তি প্রফাশ করি-বার যথেই উন্নতি আছে কি না, কারণ যাহার মন্তিক অতান্ত ক্ষুদ্র সেই ব্যক্তি অবশ্ব জনাবধি হত বুকি হয়।

মন্তকের কোন স্থানে প্রস্থিত উন্নতি দেখিতে পাওঁয়া যায়, কিন্ত ইহাতে মন্তিদ্ধের আধিকা বুঝায়না, যেমন কর্নের পশ্চ ভাণান্থিত অন্তি, শিশুপ্রবৃত্তির নিমু ভাগন্থিত অন্তি, কর্নের সম্মুখের উপরি স্থিত অন্তি, এবং দয়াপ্রবৃত্তি, ভক্তিপ্রবৃত্তি ও দৃঢ়ভাপ্রবৃত্তির মধ্য স্থান দিয়া যে লয়মান অস্থি আহে ভাছাও মন্তিদ্ধের উন্নতি বোধক নহে।

লোকে বলিয়া **থাকেন কতক গুলিন ইন্দ্রি**য় অতি ক্ষুদ্র পরিমাণে **থাকাতে ভাহারা** বস্তুতঃ

আছে কি না তাহা ভিন্ন২ করিয়া চিহ্ন কর। অসাধ্য। এই আপত্তি অতিশয় যুক্তি বিরুদ্ধ কারণ দেখুন খোদকারিরা যে সকল অভ্যন্ত স্থাক্ষ রেখা টানিয়া ছবিতে আলোকের তারতম্য প্রাকাশ করে ভাহা ইহারাই নির্ণয় করিতে পারে, এবং মুদ্রাঙ্গকারক দৃষ্টি মাত্রে অতি কুদ্র ছাপার অক-রেরও প্রভেদ করিতে পারে, এই সকলের সহিত তুলনা করিলে অতি ক্ষুদ্র মনতত্ত্বোক্ত ইন্দ্রির রহৎ বোগ হয়। তথাচ অতি ক্ষুদ্র ইন্দ্রিয় সকলের স্বীয় ও সম্বন্ধীয় পরিমাণ ভিন্ন> করিয়া টিব্র করা ফ্রান্ট ঠিনবটে, কিন্তু অভ্যাস থাকিলে এই সকলের ও খন্যান্য বস্তুর গঠনের ইতর বিশেষ, দর্শনান্ত বোবের তীক্তা দ্বারা জানিতে পারা যায়। যেমন কোন পাঠশালার বালক বা ক্রমক এক পুস্তকের মধ্যে ভিন্ন প্রকার হস্তাক্ষর দেখিলে তাহার প্রভেদ করিতে পারে না, কিন্তু ব্লুলিপিকারক দশ বংসর এই কর্ম করিতেছেন তিনি অক্লেশ্রে া গ্রন্থের এক শত পত্র এক শত লোকের দারা লিখিত হইলেও কাহার কোন্ লিপি ভাহা অবিলয়ে ব্যক্ত করিতে পারেন। আর কোন

উদাসীন ব্যক্তি কোন সংসারের পরিবারের প্রতি অবলোকন করিয়া, তাহাদের সুথত্রী অভ্যন্ত প্রভিন্ন দেখিলে ও পরস্পার পূর্থক্ করিতে স্থক্ঠিন বেশ করেন, এমত মন্ত্রাদা দেখিতে পাওয়া যায়।

মনতজু বিদ্যা ব্যবহার করিবার কালীন সর্বদা পরণ রাহিতে হইবে,যে যে ব্যক্তির মন্তক পরীক্ষা হইতেছে তাহারপ্রত্যেক ইন্দ্রিয়ের পরিমাণ অন্য रेक्टियत পরিমানার দারে নির্দারণ হয়, এবর্ধ কোন বিশেষ মস্তব্দ দেখিয়া ভাষার ইন্দ্রিয়ের পারিদাণা**ন্তুসারে অ**ন্য ব্যাক্তর ই**ন্দ্রিয়ের পরি**-मा , निर्वस करा, यास न।।

এইক্ষণে মনতত্ত্ব বিদ্যার সত্যতা প্রমাণ করিব, এবং শিক্ষাকরেও মহাশরের। কি রূপে ইন্দ্রির সক্ত িগ্ৰীক্ষণ করিবেন তাহাও বলিব। **মনতত্ত্ব** বিদ্যা প্রমাণ করিবার নিমিত্ত আমরা এক ব্যক্তির কোন এক ইন্দ্রিয় অন্য ব্যক্তির **দেই** रेक्टिएर मिर्ड कथर जुला कति ना, कात्र विके मस्टरक (य मक्न विस्थय है सिन्न चंडास व्यक्ति, তাহারা ঐ ব্যক্তির বিশেষ্থ মনের শক্তিকে সর্ব্ধা-পেকা প্রবল করে, ভনিমিত্তে মনভত্ত বিদ্যা

প্রমাণ করণে আমরা সর্বাদা এক মন্তকের ভিন্ন২ ইন্দ্রিয় পরস্পর তুল্য করি। কিন্তু শিক্ষাকারক-দিগের উচিত, যে তাঁহারা বিভিন্ন মস্তকে এক ইন্দ্রিয়েরই পরিমাণের অনৈকা দেখেন, তাহা ক্টলে ইহার ভি**ন্নং পরিমাণে**র ও সংসর্গের ঘাকার কি ৰূপ হয় তাহা স্ভাত হওনা যাই-वक ।

अहे अग्रुक तृरुष रेखिय मकल अधरम नितीकन करा आव शक, धवर कान निरमव विषया निश-রীক স্বভাবযু**ক্ত চু**ঠ বাক্তির প্রভেদ নির্ভারণ कतियात कालीन, उँक्शिपिशंदक निकट्डे वनारेश মস্প্রাক্তা করা **উচিত্ত যেমন যে সকল** গুজিত : সক্রদা বাস, সন্দেহ ও আশস্কাকরে তাঁহাদের নত্রভালেবৃতির **উন্নতি দেখি**য়া গাঁহারা **সর্বা**ন অভি অ্রাফিড এবং প্রায় কোন বিষয়ে ভয় বা সন্দেহ করেন না 🤟 হাদিগের সহিত ঐ ইন্দ্রিয়ের মাকারের তুল্য ক_{ি ।} কিঁয়া যে সকল ব্যক্তিরা ালকের প্রতি অত্যন্ত হে হ করে তাহাদের শিশু-প্রবৃত্তি দেখিয়া এ দকল ব্যক্তি যাহারা বালকের ঐতি হেহকরে না, তাহ⊜দিগের সহিত ঐ ইঞি-

রের তুলনা করিব। কথন ক্ষুদ্র ইন্দ্রিয় সকল প্রথমে নিরীক্ষণ করিব না, এবং তাহাদের পরস্পর তুলনা না করিয়া পরীক্ষা করিব না।

'লোকে সর্বাদা এই আপত্তি করিয়া থাকেন, বে ষে মনুষোর মস্তক রুহৎ তাঁহার "বুদ্দি ভীক্ষু নহে" এবং যাঁহার সন্তক জ্ঞাতিনি "জ্ঞানবান", কিন্তু মনতত্বজ্ঞ মহাশরেরা জ্ঞানেন্দ্রিয়ের পারগতা সমুদায় মন্তিকের পরিমাণের সহিত কথন ঐক্য करतन ना, कातुन अहे विजात अक ख्रेशन वीक अहे যে মন্তিফের ভিন্নং স্থান বিভিন্ন গুণ **প্রকাশ করে**, लवः अहे अयुक्त यगाणि के मञ्जूनात मिलक त्करन ুজ্ঞা**নেন্তি**র থাকিত তবে মস্তক রুহৎ হইলে ্সভাবত গতি গুণশীল মনুষ্য হইচ, এবং যদ্যপি কেবল জীবপ্রবৃত্তি থাকিত তবে 🔌 প্রবৃত্তি অতান্ত ভয়ানক উৎদাহ প্রকাশ করিত। কেরিব্**জাতির** মস্তিক্ষের পরিমাণ ইউরোপীয় জাতির ন্যায় বোধ হয়, কিন্তু পূর্বেজি ব্যক্তিদিগের কেবল জীবপ্রবৃত্তির স্থান বিশেষ উন্নত আছে, এবং ি ইউরোপীয় জাতির ধ্**র্মপ্র**বৃদ্ধি ও জ্ঞানেন্দ্রিয় সকল তাহাদের অপেক। অভ্যন্ত জ্বেষ্ঠ । কোন

मनण्डळ महामत छेळत काळित मिछिएकत शितमान मिथिया छ। हाएनत तृष्ट्रित ७ धार्मिकछात ममछात कर्न ताथ कितित्व ना। यथार्थकाल शित्रीका
कितिता क्रमा धम्छ कृष्टे मछक धार्न कितित साहातएत क्रमान भीड़ा नाहे धवर महीतावड़ा, वतः क्रम,
१३ अछा, म महून हहेनाए, जात श्राट्य मूनताय हेलिय ममान मर्थाएड चाएह किछ शृत्कालमलक घरतत मारा यहि धक्छा त्र्र, जनाही क्रमराज क्रमान ना शातक खरावे मन्य पिता किया।
दा क्रमान ना शाक, छातके मन्य निया। किया।
दा क्रमान ना साहक छातके मन्य निया।

মন্ত্রের মন্তিম পশ্বানিন মন্তিক্ষের সহিত কুলা বরণ কালে, মনত্ত্বজ্ঞ সহাশ্যেরা কেবল উত্তরের যে যে অংশে ঐক্য সাছে ভাষা দেখিরাই নর্গর করেন, এটা পশ্বাদির কোন কার্য্য দেখিরা মন্ত্রা আতির মন্তিক্ষের ভিদ্নস্থানের কিয়া সকলের পোন যুক্তি প্রাপ্ত ইইতে পারেন না, ইহার করেণ এই যে ছুই বিভিন্ন জীবের শরীরের গঠন ও ডাইফোবস্থা সকল অভান্ত ভাতুলা হও গাতে ড.ই।দিগকে ভুলা ক্ষিয়া যথার্থ কল নির্ঘণী

করিতে পার। যায় না। জনেক জ্ঞানী ব্যক্তিরা মডি-क्रटक मरनत रेन्स्रिय जानिया ७वः मञ्चरयात मिछक्रदक :चा**ॅक, कू**कुइ, वृष ७ **७वन्धाकात जन्माना कीट**दश মতিকালেকা রুহুৎ দেখিয়া মনুষ্য মতিকের পরি-मान नर्क क्षत्राहत **अर्थ एउ हाट्य म मुखान मनः** भक्तद्रमधं भगक त्यात करणनः किन्य मनजव्यक गर्। শরেরা, এই দিক ও মনভত্ব বিদ্যার বীজাতু সারে ন। হওরটাতে বিশাব ক্রেন না। কারণ ধাদি কোন পশুর মন্তিক অতি রুহৎ হয়, এবং ইহার শারী-রিক বল 🥴 জীবঞ্জাতির কিয়া প্রকাশ করিবার इनिमरा धक्त मध्युक गांकि, यक यात्र बह পশুর মধ্যিক স্কুল কিন্তু কেবল জ্ঞানে জিংগর শক্তি প্রকাশ করিবার স্থান সক**ল** অধিক হয়, ভবে উভ-स्तित मरभा अथरण का कीरवड़ वृक्ति वा निहाला जान **হইবে। হতা ও তি**মি ম**ংছে**র মতিছ মন্ত্রা:-পেকা রহ্ছ, তথাপি ইহানের বুদ্ধি নর ছ্ই**ভে** শ্রেষ্ঠ নহে, গেহেতু কেছ গ্রমাণের স্বারা ই**হা** निर्घणे करतन नारे ए रेशारमब कारनिस्तित्र জিলা প্রকাশ করিবার স্থান সকল সমপরিমিত **कार**ण मसूषा **२३ ए० ३**३९, अरे श्रापुक नात्रता नर्स

जीवारभका ऋषिकः वृक्षिमाम् देश मछा जानि-त्वन। अतः

थरे अकता नानदात । क्नुदात मिखक, त्य ও শৃকর ও শৃক্তের মণ্ডিক হইতে ক্ত, তথাপি অগ্নোক্ত জীবেরা জ্যানেন্দ্রির বিষয়ে প্রায় মনু भारत माम दलिं जरू है। असे यास । हे हाटमस अठि মনত হ বিদ্ে ধ্বাহিত করিতে হইলে, প্রথমে किया निकास क्षानित्व इट्टन्क, त्य कीत मकत्त्वद ম**ন্দিক্ষে**র গঠ*া শ্বভাব, ও অবস্থা যথোচিত মতে* পর্শ ভ্ইলে । ভাষ্টিনতে পরপার দুল্য করা বাইতে পালে কিন্তু এ**ইৰূপ কথন ঘটিতে পারে** না । ছাংপরে । না উচিত যে প্রত্যেক **জাতি**র মাড সংক্ৰমণ পান হইতে কৰ্মহীক্ৰিয় ও কোন্ স্থান স্বীত বা স্থা**নেন্দ্রিয় ক্রিয়াবান্ হয়,এবং অব**-পেরে প্রক্রেট চিন্ন, প্রকাশ করিবার **ক্ষমতাকে** ভারাদের কিটালভ ইন্দিরের পরি**মাণের সহিত** ুল্য করিছে। ববে। যদিন্তাৎ মন্তিন্ধের পরি-माराज्याः 🕟 🤝 स्नामाधिक मा इर्डाट, ७८४ (४). বীভিয় কথা ৰ াণ হ**ইভেছে তাহা ঐ জাতিতে** অবর্ত্তাল হট্ডল কিন্তু ইহা ছারা এমত স্থির করা

আমাদিগের হিন্দু লাতীয় হারা এই প্রকার দ্রব্য সকল জানয়ন করিয়া জাত হওয়া স্থক্তিন, তন্নিমিত যাহা কহিলান বিষাক করিবেন, কারণ মুক্ত জাতীয়েরা অনেক দৃষ্টান্ত দেখিয়া ইছা সপ্রমাণ করিয়াছেন।

পা ঠকমহাশয়দিগের পুতি নিবেদন ৷

হে মহাশয়গণ আপনারা সানুগ্রহ চিত্তে এই
পুত্তক পাঠ পুর্বক ইহার গুণ দোষ বিবেচনা
করিয়া আমার অসীম পরিশ্রম সকল করিবেন। এই
বিদ্যা মত্তা কি নিখ্যা ভাষা মনুষা জাতির মন্তক
পরীক্ষা করিলেই অবগত হইতে পারিবেন,
এবং এই পুত্তক পাঠ করিয়া ইহার ভাবার্থ অবগত হইয়া তৎপরে এই পুত্তকে লিখিত প্রণালী
অনুসারে মৃত্তক পরীক্ষা করিবেন। এবিসয়ে
আমার অধিক বাকা বায়করা র্থা।

অনেকে কহিয়া থাকেন ইহা নিথ্যা, কিন্তু চুংখের বিষয় এই যে ভাঁহারা এই বিদ্যার কিঞ্চি-মাত্রও না জানিয়া এমত উক্তি করেন; অভএব আমি আকাজ্জা করি বিজ্ঞবর পাঠক মহান-ঘেরা তদ্রপ না করিয়া, অগ্রে পূর্ব্বাক্ত প্রশালী অনুসারে এই পুস্তকের মর্দা বোধ করিয়া পশ্চাৎ নত্য মিথ্যা বিবেচনা করিবেদ।

কোন প্রকার ত্তন বিষয় প্রকাশ হইলে, শবিজ্ঞ লোকেরা নানা প্রকার বিজ্ঞপাদি দারা তাহা নফ করিতে যথোচিত চেফা করে, কিন্তু তাহাদের তুরতিপ্রায় উল্লেখন করিয়া দেশহিতৈষি বিজ্ঞবন মহাশ্য়দিগের তিবিধরের উল্লেড বিষয়ে বিশেষ চেফা করা উচিত, এবং যে মূর্তন বিষয় বিবিধ লোকের বিবিধ প্রকার প্রতিমন্ধকতার উল্লিড ইয়া ক্রালা দেশ বিদেশে প্রচলিত ও আদরণীয় হইতে গাকে, তাহাকে অবশ্যই স্তাবলিয়া গণ্য করিতে হয়।

 দেশে সমাদরণীয় হইয়া আসিতেছে, বোধ হয় আমাদিগের দেশেও শীঘ্র সকলের আনন্দ রুজি করিবেক সন্দেহ নাই। ুহে পাঠক মহাশয়গণ বিবেচনা করুন মিথা। বিষয় কি এতকাল পর্যান্ত প্রবল থাকিতে পারে।

এই মহোপকারিণী বিদ্যা প্রচার হইবার পুর্বে কোন দেশের ব্যক্তিরা মনের বিষয় কিছু মাত্র कानिक ना, किंख अकर्त अहे विमात कारलाहना ছারা অনেকে অনেক মানসিক ব্যাপার অবগত कडेबाइएम। हेडा जालाभि क्तिएन यमः कि श्रमार्थः ও তাহারা কি ৰূপ শক্তি, তদ্বারা ব্যক্তি সকল কি কি কর্ম করিতে সমর্থ হয়, এবং মনের শক্তি অনুসারে কি ৰূপ দোষ গুণ উৎপন্ন হইয়া থাকে, ও কি উপায়েই বাদোষ নিবারণ এবং গুণ রুদ্ধি इट्रेंट थात्र टेडामि ममस विषय वित्मय कर्ष মনুরা জানিতে **সমর্থ হ**য়, **স্বতরাং মনতত্ব** বিদ্যা বাঁহার মনে অধিষ্ঠিতা হয় তাঁহাকে ধর্ম প্রয়ের প্রথিক করে এবং সর্ব্বদা ধৈর্য্য গুণ ও পর-न्त्रात मङ्ग्रा भक्ति क्षनान करत्। **७**टे विन्ता मिथि-ल मभूमारा लाद्यात बार्खितक व्याभाव ७ हेन्छ।

এবং স্বভাব নিশ্চন রূপে অনুমান করা যায়, ভাহা হইলে দোষি ব্যক্তির দোষ দেশিয়া তা**হার প্রতি** কোধ উৎপদ্ধ হয় না বরং দয়াই জ**ন্মতে পারে**। अञापुम कल क्या विका, भिका करा ७ एम्म বিদেশে ইছার গণ প্রচার করা মন্ত্রা **মাতেরি** অবশ্র কর্ত্তরা কিম্পিক নিডি!